ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अप्रैल 2013

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

बृहद् यज्ञ एवम् योग साधना शिविर सम्पन्न

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में बृहद् यज्ञ एवम् निःशुल्क योग साधना शिविर समापन समारोह के अवसर पर उद्बोदन देते हुए शिविराध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत, प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल, मुख्य अतिथि आचार्य आर्य नरेश (हिमाचल), स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, मुख्य अधिष्ठाता, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़।

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में बृहद् यज्ञ एवम् निःशुल्क योग साधना शिविर समापन समारोह के अवसर पर उद्बोदन देते हुए आचार्य राजहंस मैत्रेय साथ में बैठे हुए पं. रमेशचन्द्र, आचार्य आर्य नरेश, शिविराध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, मुख्य अधिष्ठाता, विशिष्ट अतिथि श्रीमती शबनम जून धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जून (एम.एल.ए.)

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

नये संरक्षक सदस्य बने

द शिव टर्बो ट्रक यूनियन बादली रोड बहादुरगढ़ आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के नए संरक्षक सदस्य बनी है। इसी यूनियन का कार्य गुणवता पूर्ण और व्यावहारिक है। इसके कार्य धार्मिक क्षेत्र में भी सराहनीय हैं। यह आत्मशुद्धि आश्रम की विशेष सहयोगी है। अन्य संस्थाओं को भी दान आदि देकर सहयोग करती है। समय-समय पर इसके द्वारा यज्ञ एवम् विशाल भण्डारे का आयोजन भी किया जाता है। हम इस यूनियन के प्रधान तथा अन्य सदस्यों को शुभकामनाओं के साथ शुभाशीष देते हैं और आशा करते है कि भविष्य में भी इसी तरह धार्मिक एवम् सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते रहेंगे। हमें भी इनसे प्रेरणा लेकर पत्रिका के सरंक्षक सदस्य बनना चाहिए। -स्वामी धर्ममुनि जी

आत्मशुद्धि पथ के नये आजीवन सदस्य बने

823

श्री विजय दीवान
सुशान्त लोक-1,
गुडगांव, हरियाणा

824

श्री मंजीत आर्य
सुपुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह
दौलताबाद, गुड़गांव

825

एस.के. अग्रवाल (एडवोकेट)
सुपुत्र श्री शम्भु दयाल
अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़

826

श्री सतवीर राणा
सुपुत्र श्री छोटू राम राणा
सैनीपुरा, बहादुरगढ़

827

श्री राजेन्द्र सैनी
सैक्टर-9 ए, बहादुरगढ़

828

श्री विजेन्द्र सिंह
सुपुत्र श्री चन्द्र सिंह
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

829 श्री स्नेहकान्त शर्मा, श्री साई जन सेवा मिशन मॉडल, टाऊन, बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास अप्रैल में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

चैत्र सम्वत् 2070 — अप्रैल 2013

सृष्टि सं. 1972949113 — दयानन्दाब्द 189

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-4

(वर्ष 43 अंक 4)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	7
सम्पादकीय : सफलता के सोपान	8
दु:खो की अत्यन्त निवृत्ति ही परम पुरुषार्थ है।	9
ईश्वर और ईश्वर का पुत्र	11
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	13
आस्तीन का सांप उच्च रक्तचाप	15
भारतीय समाज में नारी की स्थिति	19
हंसो और हंसाओ	21
हृदय परिवर्तन	21
बूढ़ा शेर	22
देखा करो	22
अवैध बच्चा	22
भगवान का प्यारा कौन	23
अमूल्य मोती	23
मूर्ति पूजा से क्षणिक सन्तुष्टि तो होती है, पर तृप्ति नहीं	24
राम नवमी (19 अप्रैल 2013 ई)	26
हमें इसी दिन ही नव वर्ष पर्व मनाना चाहिए	27
नया वर्ष 1 जनवरी से नहीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	28
आर्य समाज स्थापना दिवस की 138वीं वर्षगांठ.....	30
विधयाऽमृतमश्नुते	31
वर्तमान समय में संस्कृत की उपादेयता	32
प्रकाशमय जीवन	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

फर्रुखनगर आश्रम का चक्षु यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का नेत्र चिकित्सा शिविर व चतुर्थ मासिक सत्संग दिनांक 10 मार्च 2013 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। प्रात: 10 बजे स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की अध्यक्षता मे नेत्र चिकित्सा शिविर का उद्घाटन सेठ कौशल कुमार जी फर्रुखनगर के कर कमलों द्वारा किया गया इस अवसर पर श्री विकाश जी अरोड़ा डी. आई. जी. गुड़गांव और योगाचार्य रमेश जी और पं. रमेश चन्द्र झज्जर उपस्थित रहे। आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव के अधिकारी श्री जशवन्त सिंह गुगलानी के निर्देशन में नैत्र विशेज्ञों और उनके सहायकों द्वारा नेत्र रोगियों की जांच की गयी। नेत्रों से सम्बन्धित रोगों की जानकारी भी दी गयी। शिविर में नेत्र रोगियों का उत्साह देखने को मिला। शिविर की अच्छी व्यवस्था वानप्रस्थी ईशमुनि, हरिओम्, द्वारा की गयी। मध्याह्नोपरान्त 3 बजे से लेकर 6 बजे तक स्वामी धर्ममुनि की अध्यक्षता में यज्ञ सत्संग का कार्यक्रम चला। आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ चला। जिसमें विभिन्न यजमानों ने आहुतियां दी। आचार्यजी ने सामूहिक रूप से यजमानों को आशीर्वाद दिलाया। उसके बाद ब्र. जयपाल, स्वामी हरीशमुनि जी द्वारा सुमधुर एवं प्रेरणादायी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने प्रभावशाली व्याख्यान दिया। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने स्वास्थ्य सुधार और यज्ञमहिमा, पर अपने सुन्दर विचार रखे। आचार्य मैत्रेय जी ने अपने वक्तव्य में प्राचीन ऋषियों को समझकर अपने भविष्य के सम्यक् निर्माण पर बल दिया। स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने सभी का उपसंहार करते हुए आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएं प्रदान की। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम के उद्घाटन समारोह से पूर्व वेद प्रचार

दिनांक 28 मार्च से अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आस पास के गांव में महाशय महेन्द्र सिंह आर्योभजनोपदेशक पार्टी के द्वारा आचार्य राजहंस मैत्रेय और वानप्रस्थी ईशमुनि ने यज्ञ प्रवचन एवं भजनो द्वारा वेद प्रचार कराया। लोगों एवं महिलाओं ने वेद प्रचार में भाग लेकर अपनी श्रद्धा, निष्ठा एवं उत्साह वेद कें प्रति दिखाया। सुनील कुमार ने अलीमुद्दीनपुर में अपने घर पर यज्ञ करवाकर इसकी शुरुआत की, गाँव के स्थानीय मन्दिर में उन्होंने ग्राम वासियों के वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत कराया। श्री जयनारायण जी एडवोकेट जोनियावास ने अपने घर पर यज्ञ कराया तथा प्रात: सायं दो समय गांव में वेद प्रचार कराया। जिसमें वैदिक प्रचार-प्रसार के प्रति श्रद्धालुओं एवं महिलाओं में उत्साह देखने को मिला अगले दिन इस्माइलापुर में श्री अशोक, श्री कृष्ण, श्री महेन्द्र ने अपने घर पर सपत्नीक यजमान बनकर यज्ञ कराया और रात्रि 8 बजे वेद प्रचार का कार्यक्रम बड़े उत्साह से सम्पन्न कराया जिसमें आचार्य राजहंस मैत्रेय ने नारी की गरिमा पर विशेष व्याख्यान दिया और भजनोपदेशक महेन्द्र आर्य ने भी नारियों के गोरव पर सुन्दर भजनो का कार्यक्रम रखा।

भण्डारा सम्पन्न

भयाराम मार्किट का विशाल भण्डारा यज्ञ सत्संग के साथ सम्पन्न हो गया जिसमें हजारो लोगो ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी तथा कन्यागुरुकुल लोवा कला की आचार्या को सम्मानित किया गया। भण्डारा समिति का यह पुनीत कार्य प्रेरणाप्रद है।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्विष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

वार्षिक उत्सव मनाया गया

आर्य समाज धनौरा टीकरी जिला बागपत उत्तर प्रदेश का 37 वां वार्षिकोत्सव 15,16,17 मार्च 2013 को हर्ष और उत्साह के साथ सम्पन्न हो गया। आचार्य राजहंस मैत्रेंय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ हरियाणा के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद खण्ड पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ वेदपाठ आश्रम के ब्रह्मचारी कर्ण, ब्र. कपिल, ब्र. उदयवीर, ब्र. नरेश द्वारा कुशलता पूर्वक किया गया। आचार्य श्री ने यजमानों एवं श्रोताओं को आत्मोत्थान की सद्प्रेरणा देते हुए कहा कि मानव जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका सम्यक् उपयोग आध्यात्मिक विकास है। इस अवसर पर आचार्य धीरजकुमार, आचार्य दयाशंकर, पं धनकुमार जी शास्त्री आदि विद्वानों द्वारा प्रभावशाली प्रेरणाप्रद व्याख्यान होते रहे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर द्वारा ओजस्वी सुमधुर भजनों द्वारा श्रोताओ को मंत्रमुग्ध किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कृपाल सिंह वैदवान, श्री जगदीश वैदवान, मां राजपाल सिंह राणा रहे। कार्य का समापन ओमकार सिंह ठेकेदार द्वारा किया गया। गोपीराम जी प्रधान, श्रीमती प्रभादेवी संयोजक, श्री रणवीर सिंह संरक्षक, डा. मनोज गुप्ता कोषाध्यक्ष, मा. देवेन्द्र आर्य मन्त्री, मा. विनीत वैदवान व्यय सुन्दर निरीक्षक, मा. मनोजकुमार उपप्रधान, ब. नरेन्द्र व्यायाम शिक्षक आदि ने सभी गांव तथा क्षेत्रीय लोगो के सहयोग से कार्यक्रम का सुन्दर आयोजन किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। ग्रामवासी एवं अन्य क्षेत्रीय लोगों ने विशेष लाभ उठाया।

बेटी बचाओ अभियान के तहत गायत्री यज्ञ का आयोजन

झज्जर 21 मार्च वैदिक सत्संग मण्डल व यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में मातागेट झज्जर में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाबा प्रसाद गिरी मन्दिर के महन्त श्री परमानन्द गिरी जी ने की। यज्ञ के ब्रहमा श्री आनन्देवी शास्त्री, यजमान, यशबीर व रानी, भदरदेव व मोना, विश्वपाल व बबीता रहे। श्री परमानन्द गिरी महाराज ने कहा कि अपने अपने पूर्वजो के दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए। सामाजिक बुराईयो को सभी को मिलकर दूरकरना चाहिए। मण्डल अध्यक्ष पं. रमेश कौशिक ने अपने समबोधन में कहा की बेटा अगर वंश है तो बेटी अंश है। यदि अंश बचेगा तभी वंश चलेगां बेटी बचाओ अभियान में सफल बनाने के लिए सभी महिला व पुरुषो का सहयोग बहुत जरूरी है। पं. जयभगवान आर्य ने भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सुबेदार भरत सिंह, जयभगवान आर्य, ओमप्रकाश, दलीप सिंह, प्रीत सिंह, घुप सिंह, चन्दू लाल, हुक्म सिंह, मामन सिंह, रमेश आर्य, राव रतिराम, सोना देवी, प्रवीन आदि काफी संख्या में आदमी व औरत मौजूद थे।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

बृहद् यज्ञ एवं शिविर का उद्घाटन

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ में 18 मार्च से 24 मार्च तक बृहद् यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर श्रद्धा एवं उत्साह से सम्पन्न हुआ जिसमें बहुत से श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया।

बृहद् यज्ञ एवं शिविर का उद्घाटनः- 18 मार्च सायं 4 बजे बृहद् यज्ञ और योग शिविर का उद्घाटन डॉ. स्वामी देवव्रत प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में उम्मेदसिहं डरोलिया काठमण्डी बहादुरगढ के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हुआ मध्याह्नोपरान्त 4 बजे स्वामी धर्ममुनि के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञसम्पन्न हुआ जिसमें वेदपाठ ब्रह्मचारी रवि शास्त्री और ब्र. कर्ण द्वारा किया गया। यजमान आसनों को श्री कन्हैयालाल जी आर्य एवं चन्द्रवती आर्या गुड़गांव, श्री विकास बंसल एवं उनकी माता श्रीमती रामदुलारी बंसल ने सुशोभित किया। स्वामीजी ने यजमानों का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। इसके बाद ब्र. गोपाल एवं श्रीमती रामदुलारी बंसल ने सुमधुर भजन गाकर सभी को गद्गद् किया। इस अवसर पर आचार्य राजहंस मैत्रेय, स्वामी रामान्द सरस्वती ने प्रेरणादायक प्रभावशाली उद्बोधन दिया तत्पश्चात् स्वामी देवव्रत जी ने योग विषयक भूमिका पर पर्याप्त प्रकाश डाला। और बाद में साधना करायी। शान्ति पाठ के साथ योग शिविर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन स्वामी देवव्रत जी के निर्देशन में प्रातः 5 बजे से 7 बजे तक आसन प्रणायाम् और ध्यान कराया गया। उन्होनें गांव से आये हुए बच्चों और आश्रम के ब्रह्मचारियों को व्यायाम और आसनों का प्रशिक्षण दिया। सुबह 7.30 बजे से 10 बजे तक और मध्याह्नोपरान्त 3 बजे से 5 बजे तक स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ का आयोजन चलता रहा जिसमें अशोक सिसौदिया सपत्नीक,दर्शन अबरोल मा.धूपसिह श्रीमती सुमित्रा आर्या मनुदेव वानप्रस्थी वैद्य रामानन्द, आर्य रमेश, चतुर्भुज बंसल, ज्ञानभिक्षु, राजेन्द्र सहरावत आदि अनेक यजमान बने। इस अवसर पर ब्र. गोपाल, जयपाल, उदयवीर, प्रीति आर्या आदि के सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रहा। रवि शास्त्री, आचार्य खुशीराम, आचार्य राजहंस मैत्रेय, श्री राजवीर आर्य स्वामी रामानन्दजी, स्वामी देवव्रतजी द्वारा प्रातः सायं प्रभावशाली व्याखान होते रहे।

बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति, योग शिविर समापन समारोहः- आश्रम में पिछले 18 मार्च से चल रहे बृहद्यज्ञ और योग साधना शिविर का समापन समारोह 24 मार्च को उत्साह और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया स्वामी देवव्रत जी की अध्यक्षता में प्रातः साधना चली जिसमें आसन प्राणायाम और ध्यान का प्रशिक्षण दिया गया। सैकड़ो साधकों ने शारीरिक और आध्यात्मिक लाभ उठाया स्वामी धर्ममुनि के निर्देशन में यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। वेदपाठ रवि शास्त्री ब्र. कर्ण, जयपाल गोपाल द्वारा किया गया यजमान कार्यक्रम के संयोजक श्री सतपाल जी वत्स योगनिष्ठ सपत्नीक और मा. रामस्वस्वरूप जी सपत्नीक बने। डा. स्वामी देवव्रत की अध्यक्षता में समापन समारोह का कार्यक्रम चला। मुख्यातिथि आचार्य आर्यनरेश हिमाचल रहे। इस मौके पर श्रीमती शबनम् जून धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जून एम.एल.ए. बहादुरगढ रहीं। श्रीमती रामदुलारी बंसल, श्रीमती प्रीति आर्या, प. रमेश जी झज्जर, गुरुकुल लोवाकलां की छात्राओं ने सुन्दर भजन और आसनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। डा. स्वामी देवव्रत जी ने प्रशिक्षित किये छात्रों के द्वारा सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन कराया। इसके बाद आचार्य आर्य नरेश, आचार्य राजहंस मैत्रेय, शिव कुमार शास्त्री आदि विद्वानों ने देशभक्ति, ईश्वरभक्ति विषयक ओजस्वी, प्रेरणादायक व्याख्यान दिये। श्रीमती शबनम जून ने शिक्षाप्रद कहानी से अपनी बात रखी और आश्रम के द्वारा किये जा रहे कार्यो की सराहना की। इन सबके बाद में स्वामी देवव्रत जी ने अपना अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। जिसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा अन्य बहुत सी चर्चाएं रखी। रात्रि 8 बजे प्रोजेक्टर द्वारा धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। जिसका लाभ सभी साधकों द्वारा लाभ उठाया गया स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता ने आगामी कार्यक्रमों की सूचना देते हुए आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाकार्यो का परिचय देते हुए सभी संन्यासियों विद्वानों दानियों कार्यकर्त्ताओं और साधक साधिकाओं का हार्दिक धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने प्रेरणाप्रद उद्धरण देते हुए कुशलता पूर्वक किया। भोजन की व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री द्वारा की गयी।

वेद सन्देश

यह कर्त्तव्य तेरा ही है।

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

तत्वमेतदधारयः, कृष्णासु रोहिणीषु च।
परुष्णीषु रुशत् पयः॥ ऋग् 8.93.13

ऋषिः **सुकक्षः आङ्गिरसः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **गायत्री**।

[हे इन्द्र परमात्मन्!] (**त्वं**) तूने (**कृष्णासु**) कृष्णा (**रोहिणीषु च**) और रोहिणी (**परुष्णीषु**) परुष्णियों में (**रुशत्**) चमकीले (पयः) रस को (अधारयः) निहित किया है।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! तुम्हारी महिमा का मैं कहाँ तक गान करूँ! तुम्हीं ने सब शरीरों को रचा है, तुम्हीं ने प्रकृति के पदार्थों को रचा है और तुम्हीं ने विविध प्राणियों को रचा है। वेद कहते हैं कि तुमने कृष्णा और रोहिणी परुष्णियों में चमकीले रस को निहित किया है। शरीर में 'परुष्णी' रक्तवाहिनी नाड़ियों का नाम है, विभिन्न शाखाओं में फटकर टेढ़ी-मेढ़ी होती हुई शरीर में फैली रहती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं, एक कृष्णा अर्थात् मलिन रक्तवाली नीली नाड़ियाँ और दूसरी रोहिणी अर्थात् शुद्ध लाल रक्तवाली लोहिनी नाड़ियाँ। इन द्विविध नाड़ियाँ में, हे परम प्रभु! तुम्हीं चमकीले रक्त-रूपपय को प्रवाहित करते हो। इसके अतिरिक्त शरीरस्थ इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियाँ भी क्रमशः कृष्णा, रोहिणी तथा परुष्णी कहलाती हैं। इनमें तुमने प्राण-रूप पय को निहित किया है। प्रकृति में पर्वतों से निकलकर भूमि पर बहनेवाली नदियाँ 'परुष्णी' हैं, क्योंकि वे भी पर्ववती होकर बहती हैं। ये नदियाँ तटों का कर्षण करने या कृषि में सहायक होने के कारण 'कृष्णा' और तटों पर वृक्ष-वनस्पतियाँ उगाने के कारण 'रोहिणी' कहलाती है। काले और रोहित वर्ण के जलवाली नदियों को भी क्रमशः 'कृष्णा' और 'रोहिणी' कहते हैं। हे इन्द्रदेव! इन नदियों में तुम्हीं चमकीला जल प्रवाहित करते हो। 'परुष्णी' रात्रियों को भी कहते हैं, अतः ये कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष-रूप पर्वोवाली होती है। ये रात्रियें भी कृष्णा और रोहिणी दो प्रकार की है, एक काली और दूसरी चाँदनी से चमकीली। इनमें भी हे लीलाधर! तुम्हीं ओस-कण-रूप पय को या विश्रामदायी तमस् और प्रकाश-रूप पय को स्थापित करते हो। पशुओं में 'परुष्णी' गौओं को नाम है, क्योंकि वे पर्ववती अर्थात् पालनकर्त्री होती हैं। गौओं में भी कुछ कृष्णा अर्थात् काले रंग की और कुछ रोहिणी अर्थात् रोहितवर्णा होती हैं। इनके ऊधसों में भी हे अद्भुत कौशलवाले जगदीश्वर! तुम्हें सफेद चमकीली दूध -रूप पय भरते हो। इस प्रकार सृष्टि में सर्वत्र तुम्हारा विलक्षण कर्तृत्व दृष्टिगोचर हो रहा है, जिसके कारण तुम सबसे प्रशंसा और कीर्ति पा रहे हो। हे यशस्वी कलाकार! तुम अपनी अनुपम कलाकृतियों से सदा हमारे मन को मोहते रहो।

वेद मंजरी से

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

सम्पादकीय

सफलता के सोपान

मनुष्य जीवन में सफलता को विशेष महत्व दिया गया है। सफलता के लिए ही मानव सभी ओर प्रयत्नशील है। सफलता मनुष्य जाति को अति प्रिय रही है क्योंकि सफलता में ही मनुष्य की प्रसन्नता और उन्नति मानी जाती है। सफल होने के लिए मनुष्य कुछ भी कर सकता है इसलिए कहा जा सकता है कि सफलता ही मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। सफलता दो प्रकार की होती है। पहली सफलता जिसमें मनुष्य उन सभी कर्मों को करता है जो मन को स्वच्छ निर्मल और द्वन्द्व रहित बनाते हैं। दूसरी सफलता वह है जिसमें मानव उन सभी कर्मों को करता है जो योग्य और अयोग्य हैं। उनसे वह स्वयं को कलुषित कर लेता है और स्वयं को अन्तर्द्वन्द्व से भरकर सफलता प्राप्त करता है। पहली सफलता मनुष्य के चित्त को सुखद व निर्मलता की ओर ले जाकर आत्मिक सुख की ओर अग्रसर करती है और दूसरी सफलता व्यक्ति को जटिलता से भरती हुई अन्तर्द्वन्द्व में ले जाकर धकेल देती है और वह आजीवन दु:ख में जीवन व्यतीत कर करता है अत: मनुष्य को यह भली-भांति विचार कर लेना चाहिए कि सफलता वस्तुत: सफलता होनी चाहिए जो मानव का स्वस्थ और आनन्दित रखते हुए निर्द्वन्द्व हो।

सफलता के लिए तीन सोपान की अत्यन्त आवश्यकता है -**विवेक, धैर्य और साहस।** इन तीन सोपानों के बिना ठीक सफलता की कल्पना नहीं की जा सकती। विवेक धैर्य और साहस जीवन को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के स्वर्णिम सोपान है। इन तीनों गुणों के अभाव में मनुष्य का जीवन सुखद तो नहीं अशान्त और कष्टों से भरा अवश्य होता है ये तीनो मनुष्य में बीजरूप में विद्यमान रहते हैं इन्हें जीवन रूपी भट्टी में विकसित किया जाता है यदि इनका विकास न किया जाये तो ये क्षमताएं अविकसित रूप में ही दबी रहती हैं। इसके बिना मनुष्य डरपोक बना रहता है। ये गुण भी स्वाध्याय सत्संग चिन्तन मनन और जीवन अनुभव के परिणाम है। ये स्वत: उपलब्ध नहीं होते। ये तो अर्जित करने पड़ते हैं। विवेक व्यक्ति की आंख है तो धैर्य व्यक्ति की रक्षक शक्ति है और साहस सफलता प्राप्ति की अदम्य शक्ति है अत: इन गुणों के विकास की आवश्यकता है **विवेक**-मानव की वह शक्ति है जिससे वह अपना हित -अहित, शुभ-अशुभ, योग्य-अयोग्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विचार करता है इसका विकसित होना अति आवश्यक है। यह मनुष्य का चालक है यदि इसमें कोई त्रुटि हो तो अवश्य ही पतन की संभावना है। जैसे बस का चालक भ्रमित होता है तो वह सभी यात्रियों को भटका देता है और दुर्घटना की संभावना अधिक होती है। इसलिए विवेक की अत्यन्त आवश्यकता है। यह मानव जीवन की सफलता में पहली महत्वपूर्ण सीढी है। शास्त्र भी इसका अनुमोदन करता है। **ज्ञानात् मुक्ति** ज्ञान से मुक्ति होती है सफलता हेतु विवेक मूल होता हुआ भी पूर्ण नहीं। इसका पूरक **धैर्य** है। प्राय: देखा जाता है कि विवेक तो होता है परन्तु धैर्य नहीं। धैर्य के अभाव में विवेकी व्यक्ति भी उतावला हो कर मिली हुई सफलता को असफलता में बदल देता है। इसलिए विवेक के साथ-साथ धैर्य भी परम आवश्यक है। धैर्य को मनुस्मृति में भी धर्म के दश लक्षणों में गिना गया है। इससे स्पष्ट है कि विवेक के साथ धैर्य की अत्यन्त आवश्यकता है। विवेक और धैर्य के साथ साथ सफलता का तीसरा सूत्र **साहस** है। मानव जीवन में विवेक और धैर्य तो है परन्तु साहस नहीं तो, वह किसी भी तरह की सफलता प्राप्त नही कर सकता। सफलता प्राप्ति में अनेक तरह की बांधाए आ खड़ी होती हैं और बांधाओं से घबरा कर व्यक्ति आगे नहीं बढता तो वह कभी भी सफल नहीं हो सकता। दुनिया के इतिहास में विवेक धैर्य और साहस की अनेक गाथाएं भरी पड़ी हैं। जिन लोगों के पास विवेक और धैर्य तो था परन्तु साहस नहीं था। वे जीती हुई बाजी हार गये। साहस सफलता को खींचकर लाता है। सफलता आती नहीं है। उसे तो विवेक और धैर्य के साथ साहस के द्वारा खींचकर लाया जाता है। इसलिए इन तीनो की आवश्यकता है और हमें इनका विकास करने का भरसक प्रयास करना चाहिए। - **राजहंस मैत्रेय**

दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति ही परम पुरुषार्थ है।

—राजहंस मैत्रेय, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

प्रबुद्ध पाठको! आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के पिछले अंको में योग दर्शन पर लिखा गया जो कैवल्यपाद तक पूरा हो चुका है। योग दर्शन में पुरुषार्थ का बहुलता से उल्लेख उपलब्ध है। जिसके द्वारा साधक-योगी पुरुषार्थ करके समाधि को प्राप्त होकर कैवल्य तक पहुँच सकते हैं। योग दर्शन की पूरी प्रक्रिया में पुरुषार्थ के क्रम को ही दर्शाया गया है जिसके बिना कुछ भी हाथ नहीं लगता। यह शास्त्र मुमुक्षुओं के लिए बड़ा ही उपादेय रहा है। इसलिए पहले इस पर ही लिखने का प्रयास किया गया। अब इसे थोड़ा संशोधित कर एक पुस्तक का आकार भी दिया जायेगा। जिससे योग साधकों की मांग को पूरा किया जा सके।

प्रत्येक प्राणी दु:खों से छूटने और सुख पाने की निरन्तर चेष्टा में रत है। परन्तु दुख से उसका पीछा नहीं छूटता, ऋषि, मुनि योगी, चिकित्सक और वैज्ञानिकों ने अपने अपने ढंग से इस समस्या का समाधान खोजा है और उस समाधान को जन साधारण के सम्मुख प्रस्तुत भी किया है परन्तु सभी समाधानों में ऋषियो और योगियों का समाधान ही उपयुक्त बैठता है क्योंकि अन्य समाधान पूर्ण समाधान नहीं है। समाधान के दो प्रकार हैं। पहला है समस्या का ठीक ज्ञान, और दूसरा है ज्ञान के अनुसार साधन सहित कर्म। एक है सम्यक् ज्ञान का और दूसरा है ज्ञानानुसार पुरुषार्थ का। इन दोनों के समन्वय में ही जीवन की समस्या का पूर्ण समाधान है।।

मानव का पुरुषार्थ तभी सार्थक होता है जब पुरुषार्थ के सम्बन्ध में ठीक जानकारी हो। ठीक जानकारी के अभाव में पुरुषार्थ की कोई सार्थकता नहीं। इस कमी को सांख्य शास्त्र ने पूरा किया है। सांख्य शास्त्र में संसार के उपादान कारण प्रकृति और उसके परिणाम का सुसंगत, क्रमबद्ध वैज्ञानिक तथा बुद्धिसंगत वर्णन उपलब्ध है। संसार के निमित्त कारण पुरुष का भी प्रामाणिक रूप से पर्याप्त विवेचन है। जिसका प्रयोजन भी आत्म लाभ है। इसकी ठीक जानकारी के बिना मनुष्य अपना आत्म लाभ नहीं कर सकता। अतः इसकी पूरी जानकारी प्रामाणिक रूप से सांख्य दर्शन में दी गयी है जिसके सूत्रों की व्याख्या क्रमशः प्रस्तुत की जायेगी। जिसका प्रथम सूत्र है:-

अथ त्रिविधदु:खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थ॥1॥

पदार्थ-अथ=अब **त्रिविधदु:खात्यन्तनिवृत्ति**=तीन प्रकार के दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति को **अत्यन्त पुरुषार्थः**=परम पुरुषार्थ कहा जाता है अर्थात् यहां तीन प्रकार के दु:खों के पूरे विनाश को ही परम पुरुषार्थ या मनुष्य के जीवन का परम प्रयोजन कहा गया है। जगत में मनुष्य जाति दुख सागर में डूबी रहती है और उसी से छुटकारा पाने के लिए प्रयासरत है। ऋषि कपिल ने सभी प्रकार के दु:खों को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक रूप से तीन भागों में विभाजित किया है। **आत्मनि इति अध्यात्मं तदधिकृत्य जायमानम् आध्यात्मिकम्** अर्थात् आध्यात्मिक दु:ख वह जो मानसिक और शारीरिक रूप से अपने आन्तरिक कारणों से उत्पन्न होते हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह द्वारा मन में जो दु:ख उत्पन्न होता है उसे मानसिक कहा जाता है और वात पित्त कफ आदि की विषमता से जो शरीर में दु:ख उत्पन्न होता है उसे शारीरिक दु:ख कहा जाता है। मानसिक और शारीरिक दु:खों को ही आध्यात्मिक दु:ख इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका शमन भी आन्तरिक उपायों द्वारा किया जाता है। **भूतानि चराचर जातीयानि अधिकृत्य निमित्तीकृत्य जायमान यद् दु:खं तद् आधिभौतिकम्** अर्थात् आधिभौतिक वे दु:ख हैं जो मनुष्य, पशु, पक्षी, सर्प, वृक्ष और पर्वत आदि से उत्पन्न होते हैं। **दिवः**

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

प्रभवान् वात वर्षातापशीतोष्णादीन् वा अधिकृत्य जायमानं यद् दुखं तदाधिदैविकम् अर्थात् दैवीय प्रकोप वर्षा धूप, ताप, शीत आंधी तूफान, भूकम्प आदि की अधिकता से जो दु:ख उत्पन्न होते हैं उसे आधिदैविक दु:ख कहते हैं। इन तीन प्रकार के दु:खों में सभी प्रकार के दु:खों का समावेश हो गया है। इन तीनों प्रकार के दु:खों से पूरी निवृत्ति यानि पूरी तरह से छूट जाना ही परम पुरुषार्थ अर्थात् मोक्ष है। यहां लोकिक उपायों ,द्वारा दु:खों को दूर करने को परम पुरुषार्थ नहीं कहा गया क्योंकि लौकिक उपायों के द्वारा दु:खों की पूर्णतया निवृत्ति नहीं होती परम पुरुषार्थ वही है जिससे दु:खों का पूरा छुटकारा हो।

अब यहां शंका की जाती है कि तीनो प्रकार के दु:खों की निवृत्ति औषधि, मनोविज्ञान, वैज्ञानिक उपायों तथा अन्य आवश्यक साधनों द्वारा की जा सकती है। फिर परम पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है? इसका इस सूत्र द्वारा समाधान किया जाता है-

न दृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्तिदर्शनात्।।2।।

पदार्थ-दृष्टात्=लौकिक उपायों द्वारा **तत्सिद्धि**=दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति **न**= नहीं होती **निवृत्तेऽपि**= निवृत्त हो जाने पर भी **अनुवृत्तिदर्शनात्**=पुन: आते हुए देखे जाते हैं अर्थात् औषधि, मनोविज्ञान, वैज्ञानिक उपायों तथा अन्य आवश्यक साधनों द्वारा दु:खों की निवृत्ति हो जाने पर भी फिर से दु:ख आते हुए देखे जाते हैं। हम अपने चारों ओर प्रतिदिन देखते हैं कि अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान उनके अनुरूप साधनों से हो जाता है। परन्तु वह समाधान स्थायी नहीं होता उसके बाद अन्य नई समस्याएं आ खड़ी हो जाती हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि लौकिक उपाय से दु:खो की पूर्णतया शान्ति नहीं हो पाती। दु:ख थोड़ी देर के लिए शान्त भी हो जाते है। तो पुन: आ दबोचते हैं। अत: दृष्ट उपायों से दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति असम्भव है।

आगे शंका उत्पन्न होती है कि औषधि, मनोविज्ञान, वैज्ञानिक उपायों तथा अन्य आवश्यक साधनों आदि दृष्ट उपायों द्वारा दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति नहीं हो सकती तो मनुष्य जाति द्वारा इन्हीं उपायों को अपनाने में क्यों लगी रहती है कपिल मुनि इस सूत्र द्वारा इसका उत्तर देते हैं-

**प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीरकारवत् तत्प्रती
कारचेष्टनात् पुरुषार्थत्वम्।।3।।**

पदार्थ-प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीरकारवत्=भोजन द्वारा भूख की शान्ति होने के समान **तत्प्रतीकारचेष्टनात्**=अन्य दु:खों के प्रतीरकार करने के लिए प्रयत्न किए जाने से **पुरुषार्थत्वम्**=पुरुषार्थ हैं अर्थात् जैसे भोजन द्वारा प्रतिदिन भूख की शान्ति हो जाती है। वैसे ही अन्य साधनो द्वारा नये दु:खों की शान्ति हो जाती है इसलिए मनुष्य दु:खों को दूर करने के साधनों में लगा रहता है यह भी पुरुषार्थ है हम सभी जानते हैं कि प्रतिदिन भूख लगती है और उसकी शान्ति प्रतिदिन भोजन करके ही होती है थोड़े समय के लिए भूख तो मिट जाती है परन्तु फिर लग आती है इस तरह वह हमारे पीछे पड़ी रहती है इसी तरह हम अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगे रहते हैं। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण जीवन इन आवश्यकताओं का पूरा करने में ही निकल जाता है और हम दु:खों की पूरी निवृत्ति नहीं कर पाते इसलिए इसे परम पुरुषार्थ नहीं कहा गया। क्योकि परम पुरुषार्थ वही जो पूर्णतया दु:खों की निवृत्ति करे। अत: यहां कपिल मुनि ने इन लौकिक उपाय अपनाने को पुरुषार्थ तो कहा है परन्तु परम पुरुषार्थ नहीं। अत: इसे सांख्य शास्त्र में उपादेय न मानकर उपेक्षा योग्य माना है।

(पृष्ठ 33 का शेष)

पवित्रता के ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जायेंगे।

11. फाल्गुन (उ. फाल्गुन नक्षत्र) उसके पश्चात् हमें संसार का ये विषय-वासनाओं का ऐश्वर्य ''फाल्गुनी'' फोका अर्थात् नीरस प्रतीत होने लगेगा और-

12. चैत्र (चित्रा) नक्षत्र) हमारे जीवन में ''चित्रा'' अर्थात् आश्चर्यजनक परिवर्तन के साथ हमारा जीवन उत्तम ज्ञान व सोम पान से प्रकाशमय व तेजस्विना से भर उठेगा।

अत: आओ हम सभी बारह मासों के स्वस्ति पथ का अनुगमन करें ताकि-

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा करिचद् दु:खभाग् भवेत्।।**

के मार्ग को प्रशस्त करते हुए-

**असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।**

के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

महात्मा ओम मुनि, वैदिक भक्ति साधन आश्रम,
आर्य नगर, रोहतक (हरियाणा)

ईश्वर और ईश्वर का पुत्र

– आचार्य वेदमित्र

पूर्व जन्म में मनुष्य ने जो उत्तम कर्म किये थे उस धर्माचरण के फल से उत्तम मानव शरीर पाता है। **द्वे सृष्टि अश्रृणव पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।** यजुर्वेद के इस मन्त्र से दो प्रकार के जन्मों को सुनते हैं। एक मनुष्य शरीर का धारण करना ओर दूसरा नीच गति से पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वृक्ष आदि। संसार में इतर जीव जन्तु अति बलशाली व ज्ञान सम्पन्न होते हुए भी भय तथा दुख में रहते हैं। वही मनुष्य आत्मज्ञान प्राप्त करके निर्भय तथा आनन्द से जीता है। शेर, हाथी जैसे बलवान पशुओं को मनुष्य ने अपने अधीन करके सर्कस में नाचने को मजबूर कर दिये। खूंखार शेर चीते से भी खतरनाक सर्प जिसके पास विष रूपी ऐसा हथियार है जिसको काटले वही खत्म हो जाता है लेकिन उस भंयकर सर्प को मनुष्यादि से कितना भय एक पल भी निर्भय नहीं रहता। हर पल भय में जी रहा है चाहे धरती पर हो चाहे बिल में हो। सभी अन्य जीव हल पल भय दुख में जी रहे हैं केवल मनुष्य ऐसा जीव है जो प्रभु के ज्ञान को प्राप्त करके शत्रु तथा मित्र से निर्भय हो जाता है। कई लोग ऐसा सोच लेते हैं कि तोता आदि पक्षी तो सुख से रहते हैं। खाने को वर्गों के फल ही फल? चहचाते, फुदकते रहते हैं। वे ही सुखी हैं। बिल्कुल नहीं वे भी एक-एक पल भय से जीवन जीते हैं चाहे ऊँचे पेड़ पर ही क्यों न रहते हो। दिन रात वे भी भय में हैं।

मनुष्य ने वैज्ञानिक खोजो से यान, वायुयान, हथियार, उपकरण के अलावा जीवन रक्षक औषधियों को भी जान लिया है, तब भी कोई वैज्ञानिक, डाक्टर, वेदज्ञ, वैद्य राजा रंक यह दावा न मिलाना हीं कर सकता कि मैं भय तथा दुख से दूर हूँ। मृत्यु का भय तो चाहे उत्कृष्ट बुद्धि वाला हो या मूर्ख सभी को है। शास्त्रों में वर्णन है संसार में केवल एक ब्रह्मचारी ही ऐसा है जिसे मृत्यु का भय नहीं है। यमराज ने जब विष्णु भगवान से यह शिकायत की कि भगवान आपने सभी उत्पन्न पदार्थों को जब मेरे द्वार पर आने को बाध्य किया इस ब्रह्मचारी को क्यों नहीं? मृत्यु से ऊपर कुछ नहीं केवल परमात्मा अमर है तब यह मेरा अपमान क्यों? परमात्मा ने उससे कहा हो ब्रह्मचारी को भी तुम दबा लेना अगर वह नित्य प्राण अपान आदि को न हवि देवे। वेद में सप्त ऋषि प्रतिहिता शरीरे। शरीर प्राणों से चल रहा है प्राण ज्येष्ठ भी हैं। इन्हें देव नहीं असुर कहा है। इन्द्रियाँ देव है। इन्द्रियों से हमें ज्ञान होता है प्राण आदि असुर ज्येष्ठ हैं। इनकी उत्पत्ति पूर्व होती है इन्द्रियों देव होते हुए भी कनिष्ठ हैं। बालक में इन्द्रियों का ज्ञान उतरोत्तर बाद में होता है लेकिन बालक जो अभी नवजात है वह पालने में पड़ा-पड़ा पहलवान की तरह हाथ-पांव बिना माता-पिता के सिखलाये चलाता रहता है। क्यों? परमात्मा प्राणों का प्राण है प्राणों से शरीर का वर्धन होता रहता है। बाल्यकाल में ही नहीं। युवावस्था में भी प्राणायाम से शरीर व इन्द्रियों की शुद्धि होती है ऐसा पतञ्जलि ऋषि तथा मनु ने कहा है। ऋषियों ने प्राण, अपान, व्यान की व्याख्याएँ उपनिषद आदि में की हैं जहां शरीर में इन प्राण अपान आदि से जीवन है वहीं बाह्य प्राण आदि की शुद्धि के लिए हवन है। हवन मुख्य कार्य इसलिए है शरीर ने जीवनीय शक्ति मूल रूप से तो वायु द्वारा ग्रहण करनी है। उस मूल प्राण को प्राणायाम से और फैलाना या उत्कृष्ट करना है। वायु शब्द वा यानि पुनः पुना आयु यानि जीवन। सतत जीवन। प्रायाणाम से बुद्धि जागृत होती है। वेद में भी कहा है।

स सप्त धीतिभिो हितो नद्यो
अजिन्वदद्रुहः। या एकमक्षि वावृधुः। ऋ.3।3।4

यानि उस प्राण के आधार प्रभु को बुद्धि विष्ट करती है कि इस प्राण का दाता कोई और नहीं वह प्रभु है। उस प्राण से मनुष्य, कीट पतंग, लोक लोकान्तर गति कर रहे हैं इसे ही वैज्ञानिक Cosmic Energy कहते हैं। इन्हीं प्राणों से हम जीते हैं इन्हीं के भोगादि में क्षीण होने से मरते हैं। जो प्राणों की यानि जीवनीय शक्ति की रक्षा करेगा वह मृत्य जीत लेगा। इसीलिए ब्रह्मचारी को मृत्यु से दूर रखा है। ब्रह्मचारी का अर्थ इतना नहीं वह कहीं गुरुकुल में अध्ययन करती हो। नहीं वह नित्य प्राण के

अस्तित्व को अन्तः चक्षु से देखता हो। साधना करते समय भी ऋषि दयानन्द समाधि विष्य में कहते हैं-जहाँ प्राणा जाता है वहीं मन जाता है या तो प्राण को रोक ले मन स्वतः रूक जाता है। ऋषि के प्रत्यक्ष शब्द ये है 'प्राण के आने जाने को बुद्धि से विचार करके रोके' लम्बे-लम्बे रेचक कुम्भक से कुछ नहीं होगा। इस तरह प्राणायाम करने से इन्द्रिय संयम सध जाता है। **शुरो न गोषु तिष्ठति ऋ. 3/16/6** इन्द्रियों को जीतने वाले प्राणों का क्षय नहीं करता। भोग भावों में प्राणों का क्षय ही तो है। भोगने के बाद शक्ति का क्षय, उसके भोगने के संस्कार से स्मृति, पुनः पुनः भोग, उसके संस्कार उसी अन्धतमम् में प्रवेश होता रहता है यह अविद्या है। इस अविद्या का कारण कुसंस्कार हैं। इन कुसंस्कारों को स्वयं जागने के इच्छुक प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते रहते हैं यही वेदों में बताया गया है। प्रभु को चाहते वाले वेद ज्ञान प्राप्त करके एकान्त सेवन करते उसके स्मरण से मृत्यु से बच जाते हैं। अभय हो जाते हैं। उनके लिए संसार आनन्द की वस्तु को जाता है।

अकबरपुर, रोहतक

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा, गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

राम यह सोचते हुए बहुत विचलित हुए कि इन शब्दों को सुनकर महाबाहु लक्ष्मण और सीता की क्या अवस्था होगी? दूसरी ओर भर्ता के समान ही आर्त स्वर सुनकर सीता ने लक्ष्मण से कहा कि "तुम शीघ्र ही जाकर राघव को देखो, क्योंकि शब्दों से ऐसा लगता है कि तुम्हारे भाई किसी विपत्ति में पड़ गए है।" लक्ष्मण ने सीता को अकेली न छोड़ने की भाई राम की आज्ञा का स्मरण कराया, तब जनक सुता क्रोध में आकर बोली "हे सुमित्रा के पुत्र, तु मित्र रूप में भाई का शत्रु है जो ऐसी अवस्था में भाई का साथ नहीं देता, मैं देखती हूँ कि तुझे भाई की विपद प्यारी है और न भाई से तुझे स्नेह है, इसीलिए चुपचाप बैठा है। तेरा बड़ा भाई किसी संकट में है, ऐसी अवस्था में मेरी रक्षा से क्या फल होगा।" भयभीत हुई सीता से लक्ष्मण बोला "हे वैदेही! तुम्हारा भर्ता नाग, दैत्य, गन्धर्व, देव, दानव और राक्षसों से नहीं जीता जा सकता है। बलवानों के बल भी राम को नहीं सहार सकते, सो तुम संताप को त्याग कर अपने हृदय में शान्ति धारण करो। हे देवी! चौदह हजार राक्षसों को मारकर हमने इन राक्षसों से वैर उत्पन्न कर लिया है। इसीलिए भांति-भांति की इन बोलियों को सुनकर तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए।" लक्ष्मण के उक्त वचन सुनकर सीता के नेत्र लाल हो गए और वह सत्यवादी लक्ष्मण से इस प्रकार कठोर वाक्य बोली "हे लक्ष्मण! तू अति क्रूर है। हे दुष्ट तू वन में राम के साथ भरत द्वारा प्रेरित किया हुआ आया है और मुझे पाने की इच्छा रखता है, लेकिन मैं तेरे सन्मुख ही प्राण त्याग दूंगी। लेकिन राम के बिना एक क्षण भी इस भूतल पर जीवित नहीं रह सकती।" इस प्रकार कठोर वाक्य सुनकर जितेन्द्रिय लक्ष्मण हाथ जोड़कर बोला "हे मैथिली! इस लोक में इस तरह की बातें करना स्त्रियों का स्वभाव पाया जाता है। हे जनकात्मिजे! मैं तुम्हारे इन वाक्यों को नहीं संहार सकता हूँ, तुम्हारे शब्द मेरे कानों में जलते हुए तीक्ष्ण बाणों की तरह लगते हैं, तू स्त्रीपन के इस स्वभाव के कारण मुझ पर ऐसी शंका करती है जबकि मैं तो अपने बड़े भाई की आज्ञा से यहां स्थित हूँ। मैं राम के समीप जाता हूँ। सभी ऋषि मुनि तुम्हारी रक्षा करे, मुझे बहुत बड़ा संकट आता हुआ दिखाई दे रहा है, परमात्मा ऐसी कृपा करें कि मैं राम के साथ तुम्हें फिर आकर देखूं।" लक्ष्मण के उक्त वचन सुनकर आंसू बहाती हुई सीता बोली कि "हे लक्ष्मण। राम के बिना मैं गोदावरी में डूब मरूंगी या कोई तीव्र विष खा लूंगी लेकिन किसी अन्य पुरुष का कभी स्पर्श भी नहीं करूंगी।" सीता के कठोर वाक्य सुनकर कुपित हुआ

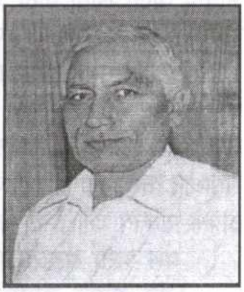

लक्ष्मण बड़ी तीव्र गति से राम से मिलने की इच्छा से चल पड़ा और इसी अवसर को पाकर संन्यासी का रूप धारण करके रावण सीता के निकट आया और वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सीता के रूप की प्रशंसा करने लगा और कहा कि "तेरी जैसी सुन्दर स्त्री का यहां वास करना बड़ा कष्टदायक है, तू कौन है? अपना परिचय तो कहो।" सीता ने ब्राह्मण वेश में आया हुआ देखकर उसे अतिथि समझा, उसका सत्कार किया और फिर उत्तर दिया कि "मैं मैथिलाधिपति महाराज जनक की लड़की व बड़े तेजस्वी 25 वर्ष की अवस्था वाले राम की भार्या हूँ। हमारे साथ वन में शत्रुओं का हनन करने वाला पुरुष व्याघ्र हाथ में धनुष लेकर उनक छोटा भाई लक्ष्मण हमारे साथ आया है। अब आप अपना भी कुल तथा गौत्र बतलाएं।" अ.का. सप्तविंश, श्लोक 10-11

रावण ने फिर इस प्रकार अपना परिचय दिया "जिससे देव, दैत्य तथा मनुष्यों सहित सब कांपते हैं, वह मैं रावण नामक राक्षसों का राजा हूं। हे सुवर्ण के रंग वाली तु मेरी पटरानी बनने योग्य है और मेरे साथ सुखपूर्वक विचरति हुई को कभी भी वन की ईच्छा नहीं होगी।" रावण के उक्त वचन सुनकर सीता उस राक्षस का निरादर करते हुए बोली "तु गिदड़ सिंहनी की इच्छा करता है, मैं महेन्द्र पर्वत के समान अपने पति राम के पीछे आई हूँ। तू मुझे स्पर्श भी नहीं कर सकता। तू काल कूट विष को पान करना चाहता है। तू पत्थर गले में लटका कर समुद्र को तैरना चाहता है। जितना अन्तर कन्चन और शीशे वे लोह में है, जितना अन्तर चन्दन और कीचड़ में है, इतना ही अन्तर तुझमें और दशरथ पुत्र राम में है। अगर तू बल से

मुझे हर भी ले जायेग ते तू निश्चय रख मैं चिरकाल तक जिन्दा नहीं रह सकूंगी। हे दुष्ट, मक्खी के साथ खाया हुआ घी, कभी हजम नहीं होता है।'' ऐसा कहकर वह शुद्ध भावना वाली सीता केले की भांति थर-थर कांपने लगी।

टिप्पणी-इस प्रकरण में हम तीन विषयों पर विचार करेंगें।

1-वन गमन के समय श्री रामचन्द्र जी की आयु क्या थी? अक्सर यह प्रश्न पूछा जाता है। रामायण के अन्दर ऐसा कोई स्पष्ट श्लोक नहीं मिलता जो आयु सम्बन्धित शंका का समाधान करता हो। हाँ यहाँ जब सीता जी रावण द्वारा पूछने पर अपना परिचय देती है तो कहती है-

मम भर्ता महातेजा वयसा पञ्चविंशकः।
अष्टादंशहि वर्षाणि मम जन्म निगण्यते।।

अ.का. सप्तविंश श्लोक 3

अर्थात मेरा तेजस्वी भर्ता 25 वर्ष की अवस्था का है और मेरे जन्म को 18 वर्ष व्यतीत हुए है। इसका तात्पर्य तो यह हुआ कि 12 वर्ष की आयु में राम को वनवास हो गया और उस समय तो सीता की आयु केवल मात्र 5 वर्ष थी। हमारा मानना है कि श्लोक के छपने व लिखने में कोई त्रुटि रह गई होगी नहीं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह आयु उनके विवाह के समय की रही होगी क्योंकि जब श्री राम स्नातक बनकर आये उसके पश्चात विश्वामित्र जी उनको अपने साथ यज्ञ की रक्षा तथा प्रशिक्षण के लिए अपने साथ ले गये थे तो निश्चित तौर पर तब सीता जी का हरण हुआ तो उस समय श्रीरामचन्द्र जी की आयु 42-43 वर्ष तथा सीता जी की आयु 32-33 वर्ष रही होगी। बाल विवाह की प्रथा उस समय नहीं थी, सभी मर्यादित थे।

2-अपना परिचय देने के पश्चात सीता जी रावण से उनका कुल और गौत्र पूछती है। इसमें प्रमाण देखिए-

सत्वं नाम च गोत्रं व कुलमाचक्ष्व तत्वतः।
(अ.का. श्लोक-11)

अर्थात हे ब्राह्मण अब आप अपना भी कुल और गौत्र बताइए।

आजकल जो समगौत्र का विवाद चल रहा है उन भाई बहनों को यह सोचना चाहिए कि आज से 9 लाख वर्ष से अधिक पहले भी कुल व गौत्र की हमारी पवित्र परम्परा थी, जिसे आज एक षड्यन्त्र के चलते नष्ट-भ्रष्ट करने के प्रयास हो रहे है। समगौत्र वालों का रिश्ता भाई-बहनों वाला होता है और ठीक इसी प्रकार एक कुल (गांव) में भी यही रिश्ता होता था जो अब भी होता है, नहीं तो हमारी प्राचीन संस्कृति नहीं बच पाएगी। पशुवत जीवन हो जाएगा।

3-यहाँ स्त्री के स्वभाव का थोड़ा सा वर्णन आया है जबकि लक्ष्मण की तरफ से बहुत धैर्य दिखाया गया है जिससे हर व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, वह केवल इतने शब्द बोलता है कि लोक में स्त्रियों का ऐसा ही स्वभाव पाया जाता है जो मुझ को बड़े भाई की आज्ञा में स्थित को ऐसा समझती हो, फिर भी परमात्मा तुम्हारा कल्याण करे। इसका अभिप्राय तो स्पष्ट है कि लक्ष्मण भी श्रीराम को परमात्मा नहीं मानते थे। मुझे ऐसा लगता है कि इन्हीं श्लोकों को पढ़कर और फिर गुस्से में भरकर तुलसीदास जी लिख बैठे-ढोल, गवार, शूद्र और नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।।

अब आप सोचिए कि ऐसी बातों को सुनकर या पढ़कर, कैसे कोई पढ़ी-लिखी स्त्री रामायण आदि हमारे शिक्षाप्रद ग्रन्थों पर विश्वास करेगी। एक दिन मैं पंजाब केसरी अखबार में मुरारी बापू जी का रामायण के उपर लेख पढ़ रहा था तो उन्होंने भी यही कहा कि तुलसीदास जी ने ठीक लिखा है। लेकिन हम इस दोहे की उपेक्षा इस दोहे से सहमत हैं-

धीरज, धर्म, मित्र और नारी। आपतकाल परखिये चारी। जहाँ तक लक्ष्मण का स्त्री स्वभाव के उपर टिप्पणी से है, उससे हम भी सहमत हैं। आइये इसका मनोवैज्ञानिक ढंग से विशलेषण करते हैं। देखिए आरम्भ से ही मनुष्य और स्त्री की प्रकृति व शारीरिक रचना मे भेद है। गुण, कर्म और स्वभाव में भी भेद पाया जाता है। कोमल हृदय और दूसरों पर सन्देह करने का स्वभाव पुरुष की अपेक्षा स्त्री में ज्यादा पाया जाता है। विदेशों में प्राईवेट जासूस कम्पनियों के आंकड़े इसका प्रमाण हैं कि पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियां अपने पतियों की जासूसी ज्यादा करवाती हैं। दूसरा क्रोध, लोभ व मोहवश कठोर वचन बोलने का स्वभाव आज भी पाया जाता है। वैसे वेद व शास्त्रों की नारी ताड़न योग्य नहीं बल्कि पूजा व सत्कार के योग्य है। तीन गुरूओं में से प्रथम गुरू माता को ही माना गया है तथा जहां इनका सम्मान होता है वहां देवताओं का निवास भी बताया गया है। इसके अतिरिक्त वाल्मिकी रामायण में भी स्त्री को कहीं भी अयोग्य व शूद्रा नहीं बताया गया है। वेदों में गहरी आस्था रखने वाली संस्था आर्य समाज की स्त्री का स्थान पुरूष में ऊँचा मानती है।

आस्तीन का सांप उच्च रक्तचाप

- डा. आर.के.शर्मा

(गतांक से आगे)

उच्च रक्तचाप की जदिलतायें:

विश्व आरोग्य संस्थान के विशेषज्ञ और अन्य शोधकर्ता मानते हैं कि जब धमनियों में रक्त का दबाव अपने सामान्य स्तर 140-90 के स्तर से बढ़ने लग जाता है और उसकी बढ़ी हुई यह दशा लम्बे समय तक ज्यों ही बनी रहती है, तो वह उच्च रक्तचाप कहलाती है। उच्च रक्तचाप की दो स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। साधारण या सौम्य या प्राथमिक यानी ऐसिन्शयल और आनुषंगिक यानी द्वितीय। उच्च रक्तचाप के ज्यादातर मामलों के पीछे वास्तविक कारण को ज्ञात करना मुश्किल होता है। इसलिए इसे प्राथमिक उच्च रक्तचाप और जिनके पीछे कुछ निश्चित कारण होते हैं, उसे द्वितीयक उच्च रक्तचाप कहा जाता है।

सौम्य उच्च रक्तचाप में रक्त दबाव की सीमा 150-110 तक ही बनी रहती है तथा यह धीरे-धीरे रोगी के शरीर पर अपना प्रभाव डालता है, लेकिन जब रक्त का दबाव 220-180 तक की सीमा तक पहुँच जाता है, तो यह कई तरह की जटिलतायें पैदा करने लग जाता है। यहाँ तक की मस्तिष्कीय आघात का कारण भी बन सकता है। अत: यह कहा जा सकता है कि उच्च रक्तचाप की तीन अवस्थायें होती हैं- सामान्य (माइल्ड), मध्यम (मोडरेट) और गंभीर (सीवर)।

अध्ययनों में देखा गया है कि इस प्रकार का उच्च रक्तचाप प्राय: 40 साल की उम्र के बाद ही शुरू होता है। इसकी वजह से रोगी को अपने सिर में जोर का दर्द या चक्कर आने की झुनझुनी सी होने लगती है, सांस फूलता रहता है, विशेषकर रात्रि के समय। इनके अलावा कई रोगियों की आँखों की रोशनी धुंधली पड़ती जाती है। कई रोगियों में इस दशा में अकारण ही उल्टियाँ आने लग जाती है, पैरों पर सूजन आने लगती है तथा वजन बढ़ने लगता है। कई बार नाक और मूत्र के साथ रक्त तक आने लग जाता है। उच्च रक्तचाप की दशा में रोगियों की मानसिक दशा बिगड़ जाती है। इससे उनकी स्मरण शक्ति कमजोर पड़ जाती है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, बेचैनी रहती है तथा वह लड़ने-झगड़ने लगता है। कुछ व्यक्ति उच्च रक्तचाप की दशा में अपने सीने में दर्द या कंपकंपी व घबराहट की शिकायत भी करते देखे जाते हैं।

रोग की गंभीर दशा में रोगी का रक्तचाप तो बढ़ा रहता ही है, इसके अलावा उसके सिर में दर्द, चक्कर आना, सिर में भारीपन रहना, माइग्रेन की शिकायत, घबराहट रहना, पसीना आना, हृदय की धड़कन व नाड़ी की गति बढ़ जाना, रात्रि और परिश्रम करते समय या सीढ़िया चढ़ते समय छाती में दर्द रहना, पैरों के साथ मुँह पर सूजन आना तथा आंखो में धुंधलापन छाना आदि लक्षण पैदा होते हैं।

शोधकर्ता कहते हैं कि उच्च रक्तचाप धीमे जहर की तरह है, जो अपने रोगी को धीरे-धीरे मरने के लिए मजबूर कर देता है। चूंकि इस रोग की शुरुआत में रोगी को कोई विशेष कष्ट नहीं होता और न ही इसके स्पष्ट लक्षण ही रोगी में प्रकट होते है, इसलिए ज्यादातर रोगी लम्बे समय तक इसे नजरअंदाज करते रहते हैं या अपने इलाज में लापरवाही बरतते हैं। इन वजहों से उनके शरीर में अन्दर ही अन्दर कई तरह की विषमतायें पैदा होती चली जाती हैं। इसका असर उनके मस्तिष्क, हृदय, गुर्दे, आंखो से लेकर रक्तवाहिनियों तक पर पड़ता जाता है। ऐसा देखा गया है कि अनियंत्रित उच्च रक्तचाप के कारण 7 से 10 वर्षो में हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे, आंखो में बीमारियों पनपने लग जाती हैं तथा रोगी की उम्र भी 10 से 20 साल घट जाती है।

अमेरिका के विश्व प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. विलियम कैनल का कहना है कि रक्तचाप जितना कम होगा उतना अच्छा है। निम्न रक्तचाप से कुछ लोगों की शारीरिक थकावट की शिकायत तो हो सकती है, परन्तु इससे वह 120 साल तक जिन्दा रह पाते हैं।

अध्ययनों से पता चला है कि रक्तचाप चाहे

किसी भी वजह से बढ़े, उसका धीरे-धीरे असर हृदय के बायें निलय पर पड़ता जाता है, क्योंकि बायें निलय को निरन्तर धमनियों में रक्त के प्रभाव को सामान्य बनाये रखने के लिए कार्य करना पड़ता है। नतीजन उसके आकार में वृद्धि होती जाती है, जो बाद में हृदय की विफलता के रूप में सामने आती है।

हृदय पर जैसे-जैसे अतिरिक्त बोझ बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे वह अपने भीतर एकत्र रक्त को महाधमनी में पूर्णतः खाली नहीं कर पाता। इस तरह हृदय की विफलता की शुरुआत होती जाती है। हृदय महाधमनी में कम मात्रा में रक्त धकेल पाता है। इस कारण शरीर के महत्वपूर्ण अंगों में भी धीरे-धीरे कम मात्रा में रक्त पहुँच पाता है। इससे हृदय के अन्दर रक्त इकट्ठा होता जाता है। नतीजन, सबसे पहले फेफड़ों में और फिर क्रमशः शरीर की अन्य नसों पर दबाव बढ़ता जाता है, उनमें पानी इकट्ठा होता जाता है तथा पैरों में सूजन आने लगती है, गर्दन की नसें फूलने लगती हैं। हृदय की ऐसी विफलता से पीड़ित 50 फीसदी से ज्यादा मरीज पर्याप्त उपचार मिलने के बावजूद 5 वर्ष से ज्यादा जिन्दा नहीं रह पाते, यहाँ तक कि 20 फीसदी से ज्यादा लोग तो एक वर्ष के अन्दर की मौत के मुँह में चले जाते हैं।

हृदय विफलता की शुरुआती दशा में ही हल्का सा परिश्रम करने या सीढ़िया आदि पर चढ़ने या पैदल चलने पर सांस लेने में परेशानी होने लग जाती है और रोगी थक कर चूर-चूर हो जाता है। रात्रि के समय ऐसे रोगियों को सीधा सोने पर सांस लेने में परेशानी होती है। उच्च रक्तचाप से अनेक प्रकार की मस्तिष्कीय जटिलतायें पैदा हो जाती हैं। इससे मस्तिष्क में रक्तस्राव या रक्तभाव की दशा पैदा हो जाती है और रोगी को दृष्टि विकार तक हो जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि जटिल उच्च रक्तचाप से पीड़ित 25 फीसदी से ज्यादा मरीजों में देर-सवेर मस्तिष्कीय आघात(ब्रेन स्ट्रोक) की समस्या का सामना करना पड़ता है, जिनमें आधे मरीज तो आघात के बाद ही स्वर्ग सिधार जाते हैं तथा शेष आधे मरीजों को जीवन भर के लिए लकवाग्रस्त होकर अपंगता का जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ता है। उच्च रक्तचाप के कारण स्थानीय मस्तिष्कीय रक्तस्राव, मस्तिष्कीय रक्तवाहिनियों में ऐंठन या शोथ (एडीमा) की सामान्य से लेकर गंभीर दशा तक पैदा होने वाले मस्तिष्कीय विकारों को हायपरटेन्सी एनसिफैकपैथी के नाम से जाना जाता है। इनके कारण रोगी की नेत्र ज्योति तो जा ही सकती है, वाक विकार शरीर के विभिन्न भागों में सुन्नता, मानसिक विकार, दौरे पड़ना या चेतना का लोप हो जाना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसा भी देखा जाता है कि उच्च रक्तचाप के कारण आंख के अन्दर रेटिना की सूक्ष्म रक्तवाहिनियाँ तक फट जाती हैं तथा वहाँ रक्त का रिसाव होने लगता है। इस वजह से आंखे लाल दिखाई पड़ने लगती हैं। इसे रेटिनल हैमरेज कहा जाता है।

उच्च रक्तचाप के बढ़े रहने से गुर्दो के मूत्रपिण्डों पर सीधा असर पड़ता है और वह रक्त के शुद्धिकरण के कार्य को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप शरीर में नमक और विषों का जमाव होने लगता है। यदि शरीर से नमक का उचित रूप से निष्कासन न हो तो शरीर में पानी का जमाव होने लगता है। एक ग्राम नमक को शरीर से निकालने के लिए 70 मि.ली. पानी की जरूरत पड़ती है। शरीर में पानी के इस संचय से हृदय की विफलता की गति बढ़ जाती है।

अध्ययनों से पता चला है कि अति उच्च रक्तचाप के कारण गुर्दे की कोशिकायें नष्ट होने लग जाती हैं और वे अपने उत्सर्जन के कार्य को सामान्य रूप से अंजाम नहीं दे पाते। शोधकर्ताओं का कहना है कि उपचार में लापरवाही दिखाने वाले कम से कम 42 प्रतिशत रोगियों के मूत्र में एल्ब्यूमिन जाने लग जाती है। एल्ब्यूमिन की मूत्र में उपस्थिति से पता चलता है कि रोगी के गुर्दे खराब हो रहे है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन लोगों के मूत्र में एल्ब्यूमिन पाया जाता है, वह सही उपचार न मिलने पर 5 साल से ज्यादा जिन्दा नहीं रह पाते।

उच्च रक्तचाप से कई अन्य जटिलतायें भी पैदा होती है, उन सभी का यहाँ वर्णन कर पाना मुश्किल है। इन रोगियों में नपुंसकता की समस्या भी आम देखी जाती है। इन सबका वर्णन फिर करेंगे।

उच्च रक्तचाप के कारणः

वैसे मात्र 15 से 20 फीसदी रोगियों में ही आधुनिकतम तमाम् गतिविधियों के सहारे रोग के मूल कारण का पता चल पाता है, जबकि शेष ज्यादातर

रोगियों में इस बीमारी के मूल कारण को ज्ञात कर पाना सर्वथा असंभव ही होता है। हालांकि उच्च रक्तचाप के अधिकांश रोगियों में रोग की जड़ में छिपे कारणों को ज्ञात कर पाना मुश्किल है। फिर भी विशेषज्ञों ने अपनी मेहनत से उच्च रक्तचाप से संबंधित कुछ कारणों को ज्ञात कर ही लिया है। ऐसे ही कुछ प्रमुख कारण हैं-आनुवांशिक, आधुनिकता से मची अफरा तफरी व भागदौड़ भरी जिन्दगी से मस्तिष्क पर दबाव पड़ने के कारण मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ना, शारीरिक श्रम में कमी आना, ज्यादा मात्रा में वसा और चिकनाई युक्त माँसाहार का सेवन करना, शराब और धूम्रपान की आदत, गर्भ निरोधक गोलियों का सेवन करना, स्टीरॉयड दवायें लेते रहना, अधिवृक्क गंथि, गुर्दे और नलिका विहीन ग्रंथियों के विकार और शरीर में खून की कमी होना।

अध्ययनों से पता चला है कि उच्च रक्तचाप और नमक के मध्य गहरा संबंध है। जिन देशों और समुदायों में नमक का सेवन ज्यादा मात्रा में किया जाता है, उनमें उच्च रक्तचाप की दर ज्यादा देखी जाती है। इनके विपरीत, जिन समुदायों में नमक का सेवन न्यूनतम मात्रा में किया जाता है, उनमें उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों की संख्या बहुत कम देखी जाती है। अमेरिकन निग्रो और जापानियों में रक्तचाप ज्यादा देखा जाता है। ऐसा इसलिए है कि वहाँ नमक का सेवन अन्य देशों के मुकाबले ज्यादा किया जाता है। दूसरी तरफ अफ्रीका, रूस के कुछ क्षेत्रों और भारत के छत्तीसगढ़ और बिहार एवं केरल के कुछ आदिवासी समुदायों में उच्च रक्तचाप नाममात्र को ही देखा जाता है, क्योंकि उनके आहार में नमक की मात्रा न्यूनतम रहती है।

विभिन्न अध्ययनों से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो चुकी है कि जिन-जिन देशों और जातियों में नमक का सेवन ज्यादा किया जाता है, वहाँ उच्च रक्तचाप की दर ज्यादा रहती है। एक ही देश में समुद्र किनारे बसे हुए लोगों में इस रोग की दर, समुद्र से दूर रहने वालों की अपेक्षा ज्यादा पायी जाती है। इसका भी नमक से संबंध है।

उच्च रक्तचाप का मदिरापान और धूम्रपान से ही गहरा संबंध है। धूम्रपान करने वाले लोगों में उच्च रक्तचाप की दर ज्यादा पायी जाती है। धूम्रपान करने वाले लोगों में रक्तवाहिनी काठिन्यीकरण, हृदय रोग के आक्रमण और मस्तिष्कीय रक्तस्राव के ज्यादा शिकार होते हैं।

तम्बाकू में दो विषैले तत्व पाये जाते हैं, निकोटीन और कार्बन मोनोऑक्साइड। इन विषों के शरीर में प्रविष्ट होने पर रक्त में नॉर एड्रीनेलिन जैसे स्त्रावों की मात्रा बढ़ने लग जाती है और रक्तवाहिनियाँ संकरी होती जाती है। एक प्रयोग के दौरान देखा गया है कि दो सिगरेट पीने भर से रक्तचाप 8-10 अंक तक बढ़ जाता है और अगले 15 मिनट तक बढ़ा रहता है। निकोटिन, कार्बन मोनोऑक्साइड फेफड़ो, रक्तवाहिनियों पर अलग से प्रभाव डालते हैं। इनसे हृदय पर कार्य का बोझ भी बढ़ता है।

अमेरिका, ब्रिटेन, स्वीडन, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में में किये गये अध्ययनों से पता चला है कि मदिरापान करने वालों में उच्च रक्तचाप की दर सामान्य लोगों के मुकाबले दो से ढाई गुणा ज्यादा होती है।

मोटापे का भी उच्च रक्तचाप से गहरा संबंध है। मोटापा पीड़ित लोगों में उच्च रक्तचाप की दर सामान्य लोगों के मुकाबले 2 से 3 गुणा ज्यादा रहती है। मोटापे से चरबी के आकार से आर्टिरिओल्स बढ़ता जाता है। उच्च रक्तचाप के 20 प्रतिशत मामलों के पीछे ही कुछ निश्चित कारण मालूम होते हैं। इस प्रकार के रक्तचाप को द्वितीयक उच्च रक्तचाप कहा जाता है। इस प्रकार के उच्च रक्तचाप के कारणों को विभिन्न परीक्षणों से ज्ञात करके उनका सही उपचार कर दिया जाये तो रोगी को अपने रोग से स्थायी रूप से मुक्ति मिल जाती है। इस प्रकार के उच्च रक्तचाप के लिए गर्भ निरोधक, एस्ट्रोजेन युक्त दवाऐं, कॉर्टीकोस्टीरॉयड दवाए, वृक्कीय विकार से मूत्र में प्रोटीन जाना, मूत्र के साथ रक्त आना, वृक्कीय शोथ, गुर्दे के संक्रमण, मूत्र मार्ग की पथरियाँ आदि कारण होते हैं।

उच्च रक्तचाप का उपचार:

रोगी में उच्च रक्तचाप का पता लगने के बाद उसके लिए जिम्मेदार कारणों को ज्ञात करने का प्रयास करना चाहिये, जिससे रोगी को स्थायी आराम मिल सके। यदि रोगी अत्यधिक धूम्रपान करता रहा है, मदिरापान करता रहा है, तो उन्हें छोड़ने के लिए कहना

चाहिए। यदि उसका वजन सामान्य से ज्यादा है, तो उसे भी कम करने का प्रयास कराना चाहिए। शारीरिक श्रम और व्यायाम आदि करने से भी उच्च रक्तचाप में शीघ्र आराम आने लग जाता है, लेकिन उच्च रक्तचाप की गंभीर दशा में एकसाथ ज्यादा श्रम साध्य कार्य नहीं करने चाहिये। अच्छा तो यही है कि अपनी सहन शक्ति के अनुसार और योग्य चिकित्सक के परामर्श से ही व्यायाम शुरू करने चाहिए। इन रोगियों को नमक का सेवन भी ध्यान से करना चाहिए। उन्हें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि उनकी दैनिक खुराक में नमक की मात्रा 6 से 8 ग्राम से ज्यादा कदापि नहीं होनी चाहिए। नमक साग-सब्जियों के अलावा ब्रेड, मक्खन, जैम, चटनी, आचार, सॉस आदि में काफी मात्रा में मौजूद रहता है। नमक से अभिप्राय उसमें मौजूद सोडियम तत्व से है और यह विभिन्न पदार्थों में नमकीन स्वाद के बिना भी अन्य रूप में मौजूद रहता है। इन थोड़े से उपायों से रोगी को पर्याप्त आराम मिलने लगता है।

उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों को अपने आहार से प्रक्रियायुक्त तेज खाद्य पदार्थों को निकाल कर उनकी जगह प्राकृतिक खाद्य पदार्थों, जैसे ताजा साग-सब्जियाँ, फल, चौकर युक्त आटे को प्रमुखता देनी चाहिए। इससे एक तो उनके शरीर में नमक की कम मात्रा पहुँचती है, दूसरे इनके शीघ्र पच जाने से रक्तचाप पर विशेष बोझ नहीं पड़ता। पानी भी इन्हें पर्याप्त मात्रा में पीना चाहिए। उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों को रोजाना सेव, पपीता, केला अमरूद, जामुन, स्ट्रोबरी और सब्जियों को आहार का भाग बनाना चाहिए। इनमें पोटेशियम, मैग्नीशियम, सेलेनियम जैसे खनिज तत्व और विटामिन 'सी', 'ई' की काफी मात्रा मौजूद रहती है। यह सभी रक्तधमनियों को लचकदार बनाये रखते हैं, माँसपेशियों को सही रूप में रखते है तथा शरीर में अम्लक्षार का सही सन्तुलन बनाये रखते हैं।

मानसिक तनाव का रक्तचाप से सीधा संबंध है। तनाव भरी जिन्दगी जीने से रक्तचाप में वृद्धि होती जाती है, जबकि मस्तिष्क को तनाव रहित कर लेने यानी मानसिक शिथिलता की दशा पा लेने से बढ़ा हुआ रक्तचाप धीरे-धीरे अपने सामान्य स्तर पर लौट आता है। मस्तिष्क को तनाव रहित बनाये रखने के लिए कई तरह की क्रियायें हैं। इनमें प्राणायाम, ओ३म् सत्संग ध्यान का अभ्यास बहुत ही कारगर पायी गयी है। इनके अभ्यास से कुछ दिनों में ही रक्तचाप अपने सामान्य स्तर पर स्थिर हो जाता है।

जमर्न और इटली में कुछ जाने-माने चिकित्सकों ने कुछ विशेष और ध्यान की विधियों को लेकर उच्च रक्तचाप पर गहन अनुसंधान किया है। इन चिकित्सकों का कहना है कि खास ढंग से श्वास लेने और ध्यान का अभ्यास करने से मस्तिष्कीय तरंगों में बदलाव आने लग जाता है। मस्तिष्कीय तरंगों में आया यह बदलाव इस बात का स्पष्ट सूचक होता है कि इनके अभ्यास से मस्तिष्कीय केन्द्रक (कोशिकायें) प्रभावित होती रही है और उनमें रासायनिक बदलाव आ रहा है। इनसे रोगी का बढ़ा हुआ रक्तचाप तो धीरे-धीरे सामान्य होता ही है, शरीर पर अन्य कोई स्वास्थ्यकारी प्रभाव पड़ने लगते हैं इन शोधकर्ताओं का कहना है कि इन 'खास क्रियाओं' के अभ्यास से रक्तचाप स्थायी रूप से सामान्य रहने लगता है।

अमेरिका के प्रो. डी. रेहलोक ने संगीत पर काफी गहन अध्ययन किया है। उनका कहना है कि हर पदार्थ ऊर्जा का ही रूप है। यह ऊर्जा पदार्थों में विशेष तरह की तरंगों और कम्पनों के रूप में विद्यमान रहती है। हर पदार्थ की अपनी एक विशेष तरंग आवृत्ति होती है। जब किसी पदार्थ पर उसकी आवृत्ति से अलग आवृत्ति की तरंग या कम्पन टकराती हैं तो वह उन पर अच्छा या बुरा प्रभाव डालती है। संगीत की विशेष ध्वनि से नाड़ी की गति, रूधिर परिसंचरण, रक्तचाप, पाचन क्रिया, सोचने, मनन करने और भावनायें परिवर्तित हो जाती हैं।

ध्वनि की विशेष तरंगों को लेकर कई देशों में कई तरह के कार्य चल रहे हैं। शोधकर्ता इन ध्वनियों की मदद से पत्थरों को तोड़ने, इमारतों को गिराने, लोहे के सरियों को मोड़ने जैसे कार्यो को अंजाम दे चुके हैं, तो दूसरी तरफ इन्हीं ध्वनि तरंगों के माध्यम से फोटो उतारने, आकाश में किसी वस्तु को खोजने, जमीन के नीचे देखने जैसे कार्य भी कर रहे हैं। ध्वनि तरंगों के माध्यम से मानसिक भावनाओं को बदलने में उन्हें कामयाबी मिल चुकी है। कुछ वर्ष पूर्व कनाडा में एक विचित्र घटना घटित हुई। घोड़ों की रेस के दौरान जीतने के नजदीक पहुँच रहे घोड़े को एक व्यक्ति ने अपने ध्वनि यंत्र के माध्यम से बिदका कर हरा दिया था।

क्रमशः

भारतीय समाज में नारी की स्थिति

- रामजन्म सिंह

धर्म ग्रन्थों में एक सुन्दर कथा है-सृष्टि का क्रम बताते हुए उसमें कहा गया है कि विधाता के मन में एक बार नारी बनाने की इच्छा उठी। उन्होंने चन्द्रमा से लुनाई ली, लताओं से अंग संचालन लिया, साँप से चपलता ली बेंत से लचक ली, घास से नम्रता ली। इन सब पदार्थों को विधाता ने मिलाया। फिर सूर्य किरणों की सुन्दरता, वायु की मोहकता, बादलों के आँसु, पुष्पों की कोमलता, मृग की आँखें, खरगोश का डर और मोर का घमण्ड। इसमें मिलायीं विधाता ने कोयल की कूक, तोते का बकवादीपन, बर्फ की ठण्डक और पहाड़ की छाती के अन्दर जलने वाली आग की भयंकर गर्मी, हीरे की कड़ाई और चीते की क्रूरता। इन सब पदार्थों को ठीक-ठीक नाप जोख कर नारी की रचना की।

नारी शोषण से लेकर सशक्तिकरण तक की यात्रा पर विचार करना है। वैदिककाल में नारी पूज्य रही। **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''** कहा गया। नारी के मांगलिक स्वरूप को दुर्गा काली लक्ष्मी सरस्वती को सबने नमन किया। अपना देश अर्धनारीश्वर का भी उपासक रहा। वैदिककाल में आपाला, गार्गी, घोषा, लोपमुद्रा जैसी विदुषी नारियाँ थीं। पंच कन्याओं का स्मरण किया जाता है। शंकराचार्य और मण्डन मिश्र का शास्त्रार्थ हुआ था, मण्डन पराजित हुए तब उनकी पत्नी भारती ने कहा कि ब्रह्मचारी अभी तो आप आधे विजेता हैं अर्धांगिनी होने के कारण अब मुझसे शास्त्रार्थ करना होगा। भारत में नारी शक्ति की उज्ज्वल परम्परा रही है। नारियों में अपरिमित शक्ति एवं क्षमताएं सन्निहित हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किए हैं। मानवीय सम्वेदना करुणा ममत्व वात्सल्य तो नारी की सामान्य विशेषताएं हैं। राष्ट्र निर्माण और विश्व शान्ति के क्षेत्र में मातृशक्ति की महत्ता सर्वोपरि बताई गयी है। ऋग्वेद अथर्ववेद में 25 ऋषिकाओं के नाम हैं वे 422 मन्त्रों की है, दृष्टा है। याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी सम्वाद जनक की सभा में विदुषी गार्गी याज्ञवल्क्य प्रश्नोत्तर हुआ था। सती अनुसुइया सावित्री शकुन्तला तारामती दयमन्ती सीता का नाम आदर से लिया जाता है। द्रोपदी नारी सशक्तिकरण का आलोक स्तम्भ है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान नारी के बिना पूर्ण नहीं होता। शक्ति स्वरूपा नारियों का नाम पति के नाम से पहले लिया जाता है जैसे सीताराम, राधाकृष्ण, उमाशंकर।

अतीतकाल में नारी का गौरवपूर्ण स्थान था। देवासुर संग्राम में दशरथ के साथ कैकेयी भी गयी थी। मदालसा राजरानी थी उसने अपने पुत्र अलर्क को त्याग बन्धुत्व का सराहनीय पाठ पढ़ाया। नारियों में गिरावट मुस्लिम आक्रमण के बाद शुरू हुई। बाल विवाह सतीप्रथा अनमेल विवाह बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन बढ़ा। नारी भोग-विलास वासना तृप्ति की वस्तु समझी जाने लगी। उनके साथ दासी जैसा व्यवहार देखकर मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा-

''अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी''

रीतिकाल के कवियों ने नारी का नखशिख वर्णन कर कामाग्नि भड़काने का काम किया। बौद्धकाल में नारी अधिकारों पर प्रतिबन्ध रहा मौर्यकाल, गुप्तकाल, सम्राट हर्ष के समय में नारी को कम महत्व दिया गया।

आधुनिक युग नारी जागरण का युग रहा, 19वीं शताब्दी में अनेक समाज सुधारक हुए ''पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'' की भावना जाग्रत हो चुकी थी। भारत की महान नारियों ने त्याग बलिदान से देश की उज्ज्वल परम्परा को आगे बढ़ाया युग जननी पन्ना धाय का बलिदान आँकने में सागर की स्याही मही का कागज वृक्षों की लेखनी कम पड़ जाएगी। मेवाड़ के उदयसिंह को दूध पिलाने वाली पन्ना राजवंश की रक्षा में अपने बेटे की बलि अपनी आँखों के सामने देखी। चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी ने नारी अस्मिता के रक्षार्थ 16 हजार क्षत्राणियों के साथ जौहर रचा। क्या इन्हें अवला कहा जा सकता है 1535 में रानी कर्मवती ने जौहर रचा वीर शिरोमणि सरदार चुड़ावत और हाड़ी रानी के रोमांचक बलिदान का वर्णन कर्नल टाउन राजपूताना के इतिहास में लिखा है, ऐसी वीरांगनाओं को शत-शत प्रणाम। आगरा में मीना बाजार लगवाने वाला कामान्ध पापी अकबर को पछाड़ने वाली किरणवती तथा गोडवाना की रानी दुर्गावती ने अकबर के छक्के छुड़ा दिए।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी आदर्श विरांगना लक्ष्मी बाई, कानपुर की नर्तकी अजीजन ने 1857 की क्रान्ति में देशभक्ति का परिचय दिया। कित्तूर की रानी चेनम्मा ने अंग्रेजों के उत्तराधिकार नीति के विरुद्ध शस्त्र उठाया और सन् 1824 में 400 अंग्रेजी सैनिक को बन्दी

बना लिया। स्वतन्त्रता की देवी मैडम कामा ने अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाई। श्रीमती एनी बेसेन्ट स्वामी विवेकानन्द की शिष्या जो 1893 में भारत आयी थियो साफिकल सोसाइटी की स्थापना की बनारस में हिन्दू कालेज की नींव डाली जिसका विकसित रूप BHU है। माँ अमृतानन्दमयी इनके भक्त 162 देशों में हैं UNO में तीन बार अतिविशिष्ट वक्ता के रूप में सम्मानित किया।

भारत में प्रथम नारियाँ

1. इन्दिरा गांधी -प्रधानमन्त्री
2. प्रतिभादेवी सिंह पाटिल- राष्ट्रपति
3. विजयलक्ष्मी पण्डित-अध्यक्ष संयुक्तराष्ट्र महासभा
4. सरोजिनी नायडू- राज्यपाल
5. सुचेता कृपलानी- मुख्यमन्त्री
6. मीराकुमार-लोकसभा अध्यक्ष
7. आरती प्रधान-इंगलिशचैनल तैरकर पार करनेवाली
8. किरण वेदी-दिल्ली पुलिस महानिरीक्षिका (आई.पी.एस.अधिकारी)
9. एम. फातिमा बीबी-न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय

इसके अलावा पी.टी. ऊषा धाविका भारोत्तोलन में शैलजा पुजारी एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने वाली 19 वर्षीया कृष्णा पाटिल, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, संगीत जगत में विख्यात हैं। जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर 13 वषीया युगरत्ना श्री वास्तव, संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा सम्मानित साहित्य जगत में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, मीरा, कंचन लता, तारा पाण्डेय काशी विश्वनाथ मन्दिर का निर्माण करवाने वाली इन्दौर की अहिल्याबाई नूरजहाँ रजिया सुल्ताना से कौन अपरिचित है। एक उदाहरण विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजम् विवाह के बाद ग्रन्थ लेखन में लीन थे उनकी स्त्री उन्हें साधनारत देख आवश्यक सेवाएं प्रस्तुत कर चली जाती, ग्रन्थ 10 वर्ष में तैयार हुआ। प्रातः पत्नी जलपान लेकर आयी गणितज्ञ ने पूछा देवी आप कौन हैं ? परिवार के सदस्यों ने परिचय कराया यह तुम्हारी पत्नी लीलावती है। जिसने त्याग-साधना का जीवन व्यतीत किया, ग्रन्थ का नाम लीलावती रखा। नारियों पर अत्याचार चीरहरण कभी दहेज हत्या सतीप्रथा नारी भ्रूण हत्या वेश्या भोग्या के रूप में यौवन की मांसलता मादकता का हृदय में दर्द का भण्डार लेकर ओठों पर मुस्कान आँखों में आँसू ऐसा कहा जाता है- लड़की पराया धन है, कभी विषकन्या नगर बधू देवदासी के रूप में शारीरिक मानसिक शोषण असहनीय पीड़ा उपभोक्तावादी जीवन पितृ सत्तात्मक व्यवस्था में नारी दासी प्रेमचन्द्र ने लिखा है ''अगर किसी पुरुष के अन्दर स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह सन्त हो जाता है। किन्तु किसी स्त्री के अन्दर यदि किसी पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।''

रामायण में चार विवाहों का वर्णन दो सफल विवाह दो असफल। राम-सीता शिव-पार्वती का सफल विवाह। जो सौन्दर्य पर आधारित विवाह सूपर्णखा का तथा नारद विश्वमोहिनी का दोनों असफल। आज लोग फोटो देखते हैं, सम्पत्ति देख विवाह करते हैं। पहले ऐसा नहीं था, राम के बल की परीक्षा जनकपुर में तथा अर्जुन के बल की परीक्षा पंचाल में, सम्पत्ति की जाँच नहीं की गयी। विवाह सात जन्मों का बन्धन होता है। उसमें प्रतिज्ञा कराई जाती है फिर भी तलाक। सावित्री को.मालुम था सत्यवान की आयु एक वर्ष है यमराज से प्राण बचाया।

प्रेम विवाह से हर व्यक्ति के जीवन में कुछ समय के लिए वसन्त ऋतु आती है शारीरिक सौन्दर्य बढ़ जाता है, इसी में गन्धर्व विवाह की चाहत बढ़ जाती है। यह मात्र वासना के कारण होता है। वासना काला धुँआ है। गांधर्व विवाह शकुन्तला दुश्यन्त का हुआ था, दाम्पत्य जीवन सफल नहीं रहा। लिंग इन रिलेशनशिप को भी मान्यता मिल गयी, मानव पशुता की ओर बढ़ रहा है। ऐसे कारनामे भारतीय संस्कृति के विपरीत हैं। वेलेन्टाइन डे का प्रचलन बढ़े हैं। कहा जाता है स्त्री एक नशा है जो देखने वालों पर चढ़ती है। क्या है यह सुपर डीलक्स सोच। नारी की अस्मत अस्मिता अस्तित्व व्यक्तित्व अधिकार पर ग्रहण लगााने का दोषी मात्र पुरुष ही नहीं, क्या नारी-नारी का शोषण नहीं करती? लड़के की माँ क्या दहेज नहीं चाहती है? आधुनिकता सामाजिक परिवर्तन के लिए वैचारिक क्रान्ति चाहिए। नारी भी समानता की लड़ाई नहीं महानता की लड़ाई लड़े। पूर्वी-पश्चिमी सभ्यता के बीच नारी झूल रही है, वह प्रायः पुरुष की शारीरिक भूख की शिकार हो जाती है। सुन्दरता उसके लिए वरदान भी है अभिशाप भी। अधिकार की लड़ाई लड़ते हुए कर्तव्य पर भी ध्यान दे, पिता की इज्जत और परिवार की मर्यादा का भी ध्यान रखे। प्रेम दया ममता की प्रतीक मनोरंजन भोग आनन्द की वस्तु न बने।

रमण ने कहा था- पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए ममता समाज के लिए करुणा से जीने वाली महा प्रकृति का नाम नारी है।

दामा, मेंहनगर, आजमगढ़

हंसो और हंसाओं

–रवि शास्त्री

1. शराबी अपनी पत्नी से – अगर मेरे हाथ में सरकार होती तो मैं देश की तकदीर बदल देता।
   पत्नी- अरे कमीने अपना पायजामा तो बदल ले सुबह से मेरी सलवार पहनकर घुम रहा है।
2. बबली- आज तुम स्कूल से जल्दी क्यों आ गये।
   सोनू- मेरा मोनू से झगड़ा हो गया।
   बबली- लेकिन तुमने झगड़ा किया क्यों?
   सोनू- क्योंकि मुझे जल्दी घर जो आना था।
3. एक कंजूस पति को करंट लगा।
   पत्नी- आप ठीक तो हो ना
   कंजूस पति-अरे मुझे छोड़ तू यूनिट देख कितना बढ़ा है।
4. ग्राहक दुकानदार से-इस शीशे की क्या गारंटी है?
   दुकानदार- आप इसे 100 वीं मंजिल से गिराओगे तो भी शीश 99वीं मंजिल तक नहीं टुटेगा।
   ग्राहक- वाह बहुत बढ़िया पैक कर दो।
5. ट्रैफिक पुलिसवाला बुढ़िया से-मैं कितनी देर से सीटी बजा रहा था। आप रूके क्यों नहीं।
   बुढ़िया- बेटा अब मेरी सीटी सुनकर रुकने की उम्र नहीं है।

हृदय परिवर्तन

–अशोक सिसोदिया, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ

हिरणी एक सुरम्य अरण्य में, घास हरी जो रही थी चर,
अक्समात् ही एक आखेटक, दिखा तनिक सी दूरी पर।
चरना भूल गई वो हिरणी, आतंकित अपने मन में,
नहीं कोई था रक्षक उसका, उस एकाकी जंगल में। (1)
आखेटक का लक्ष्य थी हिरणी, प्रत्व्चा थी तनी चढ़ी,
हाथ जोड़कर वह हिरणी भी, आखेटक की ओर बढ़ी।
निकट पहुँच उस आखेटक के, बोली वह कातर होकर,
मेरा शावक भोर से भूखा, सो जाएगा रो-रो कर। (2)
केवल थोड़ा समय मुझे दो, दूध पिला दूँ जाकर घर,
फिर अभीष्ट पूरा तुम करना, वापिस मेरे आने पर।
यह प्रतिश्रुति एक माँ की है, इस पर यदि करो विश्वास,
जाने की अनुमति दो मुझको, लौटूँ शीघ्र तुम्हारे पास। (3)
हिरणी में कुछ था विशेष जो, आखेटक ने हाँ कर दी,
तेज कदम रखती वो माता, सीधे अपने घर चल दी।
छौने को अपने चाट-चाट, उसको सब दूध पिलाया,
और पति को धीरे-धीरे, सारा वृत्तान्त सुनाया। (4)
कहा पति ने चलो तुम्हारे, हम भी साथ चलेंगे,
प्रभु की जो भी इच्छा होगी, शिरोधार्य करेंगे।
पति-पत्नी आ पहुँचे वन में, आखेटक के पास,
छुप-छुप पीछे चलता आया, बच्चा उनके साथ। (5)
हिरणी ने कर धन्यवाद, फिर अपना शीश नवाया,
अब तुम इच्छा पूरी कर लो, मैंने वचन निभाया।
बोला हिरण शिकारी से, मेरी भी विनती सुनलो,
इससे तो मैं अधिक स्वस्थ हूँ, मुझको ही तुम चुन लो। (6)
बच्चा अभी बहुत है छोटा, निर्भर है वो माँ पर,
माँ को यदि मार डाला तो, वह भी जाएगा मर।
छुपा हुआ छौना झट आया, बोला आखेटक से,
है कठोर इनका शरीर, कैसे खाएँगे बच्चे। (7)
मेरा माँस बहुत कोमल है, मुझको बलि चढ़ाओ,
माँस पकाकर कोमल मेरा, बच्चों को खिलवाओ।
पर अवाक हो खड़ा शिकारी, देख रहा था उनका प्यार,
नयन सजल थे, मन था भारी, खुद के देता था धिक्कार। (8)
इतने सरल, समर्पित, प्यारे, जीवों को यदि मारूँ,
इससे तो अच्छा इन पर मैं, अपना जीवन वारूँ।
मन परिवर्तित हुआ उसी क्षण, माँगी क्षमा सभी से,
कभी व हत्या न करूँ, मैं वचन बद्ध अभी से। (9)
हर्षित मन हो मुड़ा चल दिया, अपने घर की ओर,
लगता था उसके जीवन की, नई हुई है भोर।
देखा बच्चो! यदि सरलमन, प्रेम पूर्ण होवे व्यवहार,
सभी विषमताएँ जीवन की, इन सबसे जाती हैं हार। (10)

बूढ़ा शेर

सुनो आर्यो ध्यान लगाओ,
बूढ़े शेर के गुणगान सुनाती हूँ,
गुणगाान सुनाती हूँ,
दिल के उद्‌गार सुनाती हूँ
हरियाणें में रोहतक जिला
इसमें है एक कस्वा सांपला,
जहाँ से निकला खजान (लाडला)
अपने पिता का एक लाडला राजदुलारा
है शान्त स्वभाव शेर का।
बहादुरों का गढ़ बहादुगढ़, जहाँ शेर ने गुफा बनाई।
आये गये का मान करें-हंसकर शेर बात करें
करे स्वागत संस्कार भरै, सारे आर्य यहां विश्रामकरें।
यो शेर भाई जान बुढ़ापै, तीन माश में शिविर लगोवे,
खीर हलवा खूब खिलावै, अनाथ बच्चें का जीवन बनावै,
सदाचारी और देश भक्त बनावै, ऐसा शेर ओर ना पावै
धर्ममुनि वही कहलावै, जो मुनि धर्म फैलावै,
जंगल का शेर मांसाहारी,बहादुरगढ़ का शेर दुग्धाहारी,
सच कह सुमित्रा तु क्यों हारी।

- सुमित्रा आर्या, झज्जर

देखा करो

जहरीला धुआं उगलति चिमनियां देखा करो
मौत से संघर्ष करती जिन्दगियां देखा करो
देश में खुशहाली कितनी देखनी हो गर तुम्हें
भूख से व्याकुल किसी की
अन्तड़ियां देखा करो
सत्ता की चाबी को पाकर सेवक
मालिक बन गए लूटने की होड़ में चालाकियां देखा करो।
शूल सी चुभने लगें जन जिन्दगी की तल्खियां
अपने से बदतर किसी की मजबूरियां देखा करो
शोषित और शोषक का रिश्ता देखना चाहो अगर
फूलों का इस चूसती तितलियां देखा करो
हर चमकती चीज़ को हीरा न समझे दोस्तों
वर्षा ऋतु में जानलेवा बिजलियां देखा करो।

कवि कृष्ण सौमित्र, 13/157, बहादुरगढ़

अवैध बच्चा

-डॉ. दर्शनलाल आजाद

किसी कंवारी माँ ने अपना गर्भ गिराया,
अपने अवैध बच्चे को कुड़े पे फिकवाया,
मासूम बच्चे का माँस कुते नोच रहे थे,
कोमल कोमल अंग दांतो से दबोच रहे थे।

पेट से बाहर थी उस बच्चे की अतंड़ियां,
इधर उधर बिखरी थी, छोटी छोटी अंगुलियां,
दिल दहलाने वाला कितना दर्दनाक नजारा था,
एक कुत्ता गाल एक उसकी टाँग चबा रहा था।

अवैध बच्चे जोहड़ नालों में फिकंवाये जाते हैं,
कुड़े पे फैंक कर अपने पाप छुपायें जाते हैं,
मासूम बे जुबानों पर यह जुल्म ढाये जाते हैं,
कुंठित वासनाओं की यह भेंट चढ़ाये जाते हैं।

काश पाप करने से पहले यह विचारा होता
पवित्र संस्कारों से आत्मा को संस्कारा होता,
यह अनर्थ यह अपराध, न तुम्हारे द्वारा होता,
कुकर्म की, आत्मगिलानी से तेरा छुटकारा होता।

अपराध बोध से, तेरी आत्मा तुझे धिकारेगी,
जिन्दगी भर तू खुद को इसके लिए फटकारेगी,
बच्चे की चीख तुझे रात को नींद में पुकारेगी,
हीन भावना से हताश आत्महत्या की विचारेगी।

आत्मा झझंड़ने को कविता लिख रहा आज़ाद
अपने अंश को बर्बाद कर, कैसे होगी शाद?
जौ बो जौ काट, सिद्धांत है यह निरविवाद,
जैसा कर वैसा भर, मत भूल रख इसे याद।

यह बच्चा पूछता है आप से आप,
कुछ प्रश्न करता है यह सारे समाज से,
मुझे क्यों इस धरती पे लाया गया,
मुझे क्यों कूड़ें पे है फिकवाया गया।

22, पटेल नगर, पानीपत

भगवान का प्यारा कौन

अबू बीन अदम अपने कमरे में बैठे कुछ लिख रहे थे कि खिड़की में से अकस्मात बड़ा ही तीव्र प्रकाश अन्दर आया। सारा कमरा आलोकित हो उठा। उन्होंने विस्मय से निगाह उठाकर देखा तो पता चला, एक आकृति कमरे में खड़ी है।

अबू बीन अदम ने पूछा, "तुम कौन हो?"

आकृति ने कहा, "मैं देवदूत हूँ।"

अबू बीन अदम ने प्रश्न किया, "यहाँ कैसे आये हो?"

उत्तर मिला, "मुझे ईश्वर ने भेजा है।"

"किसलिए ?"

"उन लोगों की सूची बनाने के लिए, जो ईश्वर की सेवा करते हैं। उन्हें वह आशीर्वाद देंगे।"

अबू बीन अदम ने कहा, "मैं तो ईश्वर की सेवा नहीं करता, इंसानों की सेवा करता हूँ।"

यह सुनकर देवदूत चला गया। अबू बीन अदम अपने काम में लग गए। अगले दिन देवदूत फिर आया। अबू बीन अदम ने पूछा, "अब तुम कैसे आये हो ?"

देवदूत ने कहा, "मैं उन लोगों की सूची लाया हूँ जिन्हें ईश्वर ने अपना आर्शीवाद दिया है।"

इतना कहकर देवदूत ने वह सूची अबू बीन अदम के सामने रख दी। अबू बीन अदम सूची को देखकर चकित रह गये। उनका नाम सबसे ऊपर था।

चीने मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था

"जो इंसानों की सेवा करते हैं,
वे मेरी ही सेवा करते हैं।"

- प्रस्तुति जयपाल आर्य

"अमूल्य मोती"

1. सभी शरीर नाशवान हैं, सभी धन-सम्पत्तियां चलायमान हैं और मृत्यु निकट है। ऐसे में मनुष्य को सदैव धर्म का संचय करना चाहिए।
2. दान देने का स्वभाव, मधुरवाणी, धैर्य और उचित की पहचान, ये चार बातें अभ्यास से नहीं आती, ये मनुष्य के स्वाभाविक गुण हैं।
3. शान्ति के बराबर दूसरा तप नहीं है, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, लालच से बड़ा कोई रोग नहीं है और दया से बड़ा कोई धर्म नहीं है।
4. कमाए हुए धन का दान करते रहना ही उसकी रक्षा है जैसे तालाब के पानी को बहते रहना उत्तम है।
5. वृद्धजन की सेवा ही विनय का आधार है।
6. जो अपने कर्तव्य से बचते हैं, वे अपने आश्रित परिजनों का भरण-पोषण नहीं कर पाते।
7. स्वार्थी व्यक्ति को कभी कोई अच्छी दृष्टि से नहीं देखता लेकिन जो व्यक्ति दूसरों के हित के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है, उसकी लोग पूजा करते हैं। स्वार्थी व्यक्ति कभी दूसरे का हित नहीं सोच सकता।
8. सुख सपना, दुःख बुलबुला, दोनों है मेहमान उसको आदर दीजिए जो भेजे भगवान।
9. तुरन्त कहा गया 'धन्यवाद' एक सप्ताह बाद भेजे गए 2 पृष्ट के कृतज्ञता पत्र से कहीं अधिक प्रभावी होता है।
10. सर्वस्व त्यागी वह है जो दूसरों के अवगुण को नहीं देखते हैं।

- श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा बहादुरगढ़

श्री प्रकाश चन्द्र जी दिवंगत

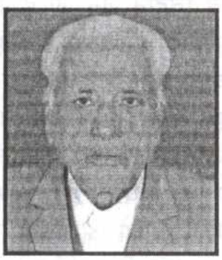

जन्म: 1935-2013

स्व. प्रबुद्धमुनि पूर्वनाम श्री प्रकाश चन्द्र वरमानी 20 जनवरी 2013 को हृदयावरोध के कारण इस भौतिक शरीर को त्याग चुके हैं। **सः जातो येन जातेन, याति वंशो समुन्नतिम्।** इस श्लोक को सार्थक करते हुए अपने जीवन को परिवार वासियों, सगे-सम्बन्धियों मित्रों एवं साधु-संन्यासियों तन-मन-धन से आजीवन सेवा करते रहे। धर्म के मार्ग पर आरूढ़ धर्मपत्नी संन्यासिनी माता सुमन्मा यति के साथ आश्रम का जीवन व्यतीत करते हुए सुकर्मों का संचय करते रहे। परमात्मा इनके किये शुभ कर्मो के फलस्वरूप इन्हें कल्याणकारी जाति-आयु-भोग प्रदान करें, ऐसी मेरी व समस्त आश्रम वासियों की सदेच्छा है।

- स्वामी धर्ममुनि

"मूर्ति पूजा से क्षणिक सन्तुष्टि तो होती है, पर तृप्ति नहीं"

–खुशहाल चन्द आर्य

सन्तुष्टि मन का विषय है और तृप्ति आत्मा का विषय है। मूर्ति पूजा से मन की सन्तुष्टि कुछ समय के लिये जरूर होती है, पर इससे आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं। आत्मा की तृप्ति के लिए या आत्मा की भूख मिटाने के लिए हमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना ही करनी पड़ेगी। जैसे शरीर की भूख, भोजन से मिटती है वैसे ही आत्मा की भूख मिटाने के लिए ईश्वर की आराधना यानि स्तुति, प्रार्थना व उपासना की आवश्यकता होती है। पहले हम ईश्वर की स्तुति से उसकी प्रशंसा करते हैं और ईश्वर के किये उपकारों का गुण-गान करके ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते है और अपने मन के भावों को जगाते हैं और फिर प्रार्थना से अपने दोषों को ईश्वर के सामने प्रकट करते हैं और उनसे छुटकारा दिलवाने के लिए निवेदन करते हैं। जब हम दोषों के छोड़ने का संकल्प कर लेते हैं तब हम ईश्वर की उपासना अर्थात ईश्वर के पास बैठते हैं और ईश्वर के गुण, दया, करूणा, परोपकारिता, निष्पक्षता आदि अपने जीवन में उतारने का अभ्यास करना आरम्भ कर देते है और वे गुण हमारे जीवन में आने से हम मानव कहलाने के अधिकारी बन जाते हैं। सन्ध्या करने से हमें यह लाभ होता है कि हम ईश्वर के पास बैठकर अपने दुर्गुणों को छोड़ना और सद्गुणों को ग्रहण करना आरम्भ कर देते हैं। सन्ध्या करते-करते हम अष्टांग योग की ओर बढ़ने लगते हैं। अष्टांगयोग के यम-नियमों के पालन से हम अपने अन्दर और बाहर की शुद्धि करके ईश्वरीय गुणों को धारण करने की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं। फिर प्राणायाम द्वारा अपने चंचल मन को किसी एक स्थान पर एकत्र करके धारणा, ध्यान, समाधि की ओर बढ़ते हैं। जैसे-जैसे हमारी यात्रा आगे बढ़ती जाती है, हमें आनन्द की अनुभूति अधिक होती जाती है और समाधि तक पहुँचने पर हमें अपार आनन्द की अनुभूति होती है। कारण हम ईश्वर की शरण में चले जाते हैं। ईश्वर आनन्द का भण्डार है, हमें उसी आनन्द के सागर में गोते लगाने का मौका मिल जाता है। इसलिए वहाँ हमें अपार आनन्द की अनुभूति होने लगती है। बस! यही ईश्वर की प्राप्ति है और यही आत्मा की तृप्ति है और यही मानव का अन्तिम लक्ष्य है जिसके लिए ईश्वर जीव को मानव योनि में भेजता है। मनुष्य योनि ही सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम योनि है और ईश्वर की अन्तिम कृति है। मोक्ष का द्वार भी यही योनि ही है। समाधि प्राप्त मनुष्य मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करता है जिसको अवधि 32 नील 20 खरब 40 अरब वर्ष है। इस अवधि में जीव ईश्वर के सान्निद्ध में रहते हुऐ मोक्ष के परम आनन्द को प्राप्त करता रहता है। अवधि के बाद उसे पुनः धरती पर मनुष्य योनि में ही आना पड़ता है।

यह मोक्ष हमें वैदिक रित्यानुसार सन्ध्या (ब्रह्म यज्ञ) करते और अष्टांग योग करने से ही प्राप्त होता है। मूर्ति पूजा से यह कभी भी सम्भव नहीं कारण मूर्ति पूजा करने से तो हम मूर्ति के श्रृंगार आदि को देखने में उसी के आस-पास ही घूमते रहते हैं और मूर्ति के दर्शन करके क्षणिक सुख पा कर ही सन्तुष्ट हो जाते है और उसी को ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति समझ कर अपना पूरा जीवन इसी ताने-बाने में बिता देते हैं और ईश्वर प्राप्ति का सही वैदिक रास्ता पकड़ने का हम कभी ध्यान ही नहीं देते है और उस रास्ते से सदैव भटके रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने ईश्वर की उपासना को मूर्ति पूजा के माध्यम से करने की बतला कर बड़ी भूल की है। इसका नाम मूर्ति दर्शन रखना चाहिए था। पूजा का तात्पर्य तो किसी की सेवा करना, सम्मान करना या उसकी आज्ञा का पालन करना होता है। यह तीनों काम जीवित व्यक्ति के ही हो सकते हैं, जड़ के नहीं। जीवित माता-पिता, वृद्धजन व विद्वान जन जो हमारा किसी रूप में भी उपकार करते हैं, हमें उनकी कृतज्ञ भाव से पूजा करनी चाहिए यानि उनकी सेवा-सुश्रूषा व सम्मान करना चाहिए जिससे उनका आशीर्वाद हमें प्राप्त हो सके। मूर्ति की पूजा हो ही नहीं सकती, उसके तो केवल दर्शन ही हो सकते हैं। किसी मनचाही वस्तु को देखकर मन में जो असन्नता या सन्तुष्टि होती है, वही प्रसन्नता व सन्तुष्टि मूर्ति को भी देख कर होती है, पर यह मूर्ति ईश्वर से अपार आनन्द

की अनुभूति नहीं करवा सकती। इसके लिए हमें सन्ध्या से आरम्भ करके अष्टांग योग को करते हुए हमें समाधि तक पहुँचना ही होगा। तभी हमें ईश्वर की अथाह आनन्द की अनुभूति होगी, अन्यथा नहीं। इस पद्धति को सिखाने वाला केवल वैदिक धर्म ही है, अन्य कोई नहीं।

वैदिक धर्म में प्रत्येक गृहस्थी को पाँच महायज्ञों को करने का आदेश है। (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) अतिथि यज्ञ (5) बलिवैश्वदेव यज्ञ। प्रथम ब्रह्मयज्ञ के दो अंग है, सन्ध्या व स्वाध्याय, जो हमें ईश्वर प्राप्ति यानि मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाता है। सन्ध्या से हम ईश्वर के समीप बैठने की अनुभूति करके ईश्वर के गुण, दया, करूणा, सहृदयता, परोपकारिता, निष्पक्षता, न्यायकारिता, सच्चाई, ईमानदारी आदि को धारण करने का सामर्थ प्राप्त करते हैं। दूसरा अंग है स्वाध्याय, इससे हम अपने जीवन के अच्छे व बुरे कार्यों का चिन्तन करते हैं। चिन्तन करके बुरे कर्म को छोड़ना और अच्छे कर्म करने का प्रयास करते हैं जो हमें ईश्वर की तरफ जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही स्वाध्याय में अच्छी ज्ञान वर्धक तथा चरित्र निर्माणक पुस्तकों को पढ़ने का भी प्रावधान है। ये पुस्तकें भी हमारी बुद्धि को शुद्ध व पवित्र करती हैं और अच्छे रास्ते पर चलने की प्रेरणा देती हैं। इसलिए यह भी ईश्वर की ओर ले जाने में सहायक होती है। दूसरा देव यज्ञ, इसमें हवन और सत्संग करना होता है जिससे वातावरण व पर्यावरण शुद्ध व पवित्र होता है और सत्संग से परिवार में प्रेम बढ़ता है। तीसरा पितृयज्ञ है जिसमें माता, पिता, गुरू व वृद्धजनों की सेवा व सुश्रूषा करने का विधान है। यहाँ यह बात बतला देनी भी उचित है कि सेवा को तो सब समझते हैं, पर सुश्रूषा को कम लोग समझते है। सुश्रूषा का तात्पर्य है कि वृद्धों की बात के ध्यान देकर सुनना और उनकी आज्ञा का पालन करना। इससे भी वृद्ध जन सेवा की भांति ही सन्तुष्ट व प्रसन्न होते हैं जो वर्त्तमान में कम होता दिखाई देता है। चौथा अतिथि यज्ञ, यह कोई बिना निश्चित समय किसे विद्वान्, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी या सन्यासी आ जावे तो उसकी यथाशक्ति जल व भोजन से सेवा करना, अतिथि यज्ञ कहलाता है। यह विशेषकर गृहस्थियों पर लागू होता है। अतिथि सेवा हमारे वैदिक धर्म में एक विशेष स्थान रखता है। पांचवा बलिवैश्वदेव यज्ञ, यह प्राणी मात्र के कल्याण करने के भाव का यज्ञ है। इसमें प्रत्येक मनुष्य को अपना भोजन करने से पहले भोजन का कुछ अंश निकाल कर, चींटी, गाय, चीडी, कबूतर, अपाहिज व भूखे को खिला कर फिर स्वयं के खाने का यज्ञ है। इस प्रकार वेदों में पाँच यज्ञों को करने का विधान है। इनके पालन करने से हर व्यक्ति स्वयं सुखी रहते हुये समाज, राष्ट्र व प्राणी-मात्र को सुखी बना सकता है।

वैदिक धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो ईश्वर की सही उपासना करना सीखाता है तथा अपना व दूसरों के जीवन को सुखी और उन्नत बनाते हुऐ मोक्ष की ओर अग्रसर करता है। वैदिक धर्म किसी एक की सम्पत्ति नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवनोपयोगी शिक्षा देकर सब के जीवन को सुखी बनाता है। यह शुभ कर्म करने की और अशुभ कार्य.छोड़ने की शिक्षा देता है। आप जितनी भी सन्ध्या करो, हवन करो, वेद पढ़ो, परन्तु जब तक आप मानवीय गुण, सत्य, अहिंस, धैर्य, दया, करूणा, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि को जीवन में धारण नहीं करोगे, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लोभ, लालच, क्रोध व अभिमान का त्याग नहीं करोगे, प्राणी-मात्र से प्यार नहीं करोगे और अष्टांग योग द्वारा समाधि तक नहीं पहुँचोगे तब तक परम् आनन्द की अनुभूति होना और मोक्ष की प्राप्ति होना असम्भव है। हाँ! जीवन को युद्ध व पवित्र बनाने में सन्ध्या करना, हवन करना व वेद पढ़ना भी सहयोगी है। दूसरे जो सम्प्रदाय है उनका कर्म पर ध्यान कम और अपनी पूजा पद्धति पर ध्यान अधिक होता है। इसीलिए वे अपने ही सम्प्रदाय को ही ईश्वर प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति का सही मार्ग कहलाते हैं और अन्यों का रास्ता गलत बताते हैं। यही परस्पर की लड़ाई-झगड़े की जड़ है। इसलिए वैदिक धर्म ही सब को अपनाना चाहिए।

मूर्ति पूजा करने से सब से बड़ा दोष यह है कि मनुष्य अपने आराध्य देव, चाहे वह राम हो, कृष्णा हो, हनुमान हो, गणेश हो, शंकर हो, काली हो, दुर्गा हो या अन्य कोई देवी-देवता हो, उसके दर्शन मात्र से ही वह ईश्वर की पूजा को पूर्ण समझ बैठता है और उसके बाद वह दिन भर अच्छे-बुरे कर्म सभी करता रहता है यानि उसको अपने अराध्य देव के दर्शन मात्र

ही ईश्वर की पूजा (उपासना) करने के लिए पर्याप्त है और वह समझता है कि मेरे आराध्य देव ने अब मुझे सभी काम करने की छूट दे दी है। यह बात केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं, सभी तथा कथित धर्मों में है। हिन्दू अपने देवता के दर्शन करने से, मुस्लिम पाँच समय नमाज अदा करने से, ईसाई, ईसा पर विश्वास लाने से, सिख गुरू ग्रन्थ सुनने से अपने सब पाप धुल गये या नष्ट हो गये समझने से ही आज विशेष कर भारत में पाप व अनाचार इतना अधिक बढ़ गया है जिसके परिणाम स्वरूप मेरा प्यारा भारत जो किसी समय ''विश्व गुरु'' था, उसका सम्मान करते-करते आज एक दयनीय स्थिति में आ कर खड़ा हो गया है जिसकी किसी ने कल्पना तक भी नहीं की थी।

80 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकता-700007

राम नवमी (19 अप्रैल 2013 ई.)

(नौ लाख सत्तर हजार एक सौ तेरहवाँ जन्मदिन)

रामचन्द्र जी को सनातन धर्मी भगवान का सातवां अवतार मानते हैं। आर्य समाजी इन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में मानते हैं और इनके गुणों-विशेषताओं को अपनाने पर बल देते हैं। आपका जन्म त्रेता युग के संक्रमण काल में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में नवमी तिथि को दोपहर 12 बंजे हुआ था। इनका जन्म अयोध्या में हुआ था। वहां भव्य मन्दिर बनाया गया था जिसे मुगल बादशाह ने तुड़वा कर मस्जिद का रूप दे दिया था। 1528 से 1947 तक हिन्दुओं ने इस स्थान को प्राप्त करने के लिए 76 बार संघर्ष किया किन्तु असफल रहे। 1947 में पत्रकारों ने गांधी जी से राम जन्म भूमि पर बने हुए ढांचे के बारे में प्रश्न पूछा था। उत्तर में गांधी जी ने कहा था कि ''पहले हिन्दू समाज सिद्ध करे कि अयोध्या में रामजन्म भूमि स्थल पर मन्दिर था।'' गांधी जी का उत्तर पूर्ण रूप से निराशावादी था किन्तु सर्वोच्च न्यायालय में है। हिन्दू समाज की विचित्र सोच देखकर आश्चर्य होता है।

–डा. जी.सी.गुप्त, बुलन्दशहर

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

"हमें इसी दिन ही नव वर्ष पर्व मनाना चाहिए"

4 अप्रैल 2011 को नव वर्ष है आया, हमें इसी दिन नव वर्ष पर्व बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाना चाहिए।

आज सब भाई-बहन मिल कर, पुराने बैर-भाव तज कर, परस्पर गले मिल-मिल कर, हमें अपना प्रेम प्रदर्शित करना चाहिए।।

जिसने जीवों के कर्मक्षेत्र के रूप में, इसी दिन यह सृष्टि रची, उस ईश्वर का कृतज्ञ भाव से आभार व्यक्त करना चाहिए।

इसी दिन ईश्वर ने ही मानव उत्पत्ति, दिया हमारे कल्याण के लिए वेद-ज्ञान, उसी वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए।।

वेद है मानव जीवन के आधार, जो चलता है इनके अनुसार, होता वह दुःखों से पार, इसलिए इनको अपने जीवन में उतारना चाहिए।

वेद किसी एक के नहीं, इससे होता है मानव-मात्र का कल्याण, ये भी हैं सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी के समान, इनको भी ईश्वर प्रदत्त समझना चाहिए।।

इसीदिन हुआ श्री राम का राज्याभिषेक, देता हमें यही उपदेश, वैसा ही सुख, शान्ति, समृद्धि भरा राम राज्य पुनः देश में होना चाहिए।

इस दिन राजा बने युधिष्ठिर जैसा सन्त, जब हो गया कृष्णा की नीति से सब पापियों का अन्त, वही "जैसा को तैसा" की नीति, हमें अपनानी चाहिए।

देश में बढ़ रहा है जो देश द्रोहियों के कारण उग्रवाद, आतंकवाद, इसे मिटायें बिना किये वाद-विवाद, हर हालत में जनता को सुखी बनानी चाहिए।।

इसी दिन वीर विक्रमादित्य का भी हुआ था राज्याभिषेक, उसके राज्य में थी सभी व्यवस्थाएँ नेक, वही सुव्यवस्था हर जगह होनी चाहिए।

अफसरों व मन्त्रियों द्वारा हो रहा है भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, कर्त्तव्य हीनता का नहीं है कोई पारावार, इन सब पर कठोर दण्ड का विधान होना चाहिए।।

इसी दिन एक योगी देव दयानन्द ने, की थी आर्य समाज की स्थापना, कोई स्वार्थ नहीं था उनका अपना, था उनका एक सपना, वह स्वप्न साकार होना चाहिए।

महर्षि चाहते थे, हो वेदों का प्रचार, लोगों का बने शुद्ध जीवन और विचार, किसी पर न होने पावे अत्याचार, ऐसे भारत के प्रभुत्व व गौरव का आकारर होता चाहिए।।

प्रकृति भी लेकर आती है, पतझड़ से बसन्त की नव बहार, जो हमें देती है यही उपहार, जिसका यही निकलता सार, इसी दिन हमें नव वर्ष का त्यौहार मनाना चाहिए।

इसके पीछे जुड़ी हुई हैं कितनी ही घटनाएँ व विशेषताएँ, इन्हीं को हम आधार बनाएँ, इसी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से, हमें भी दृढ़ता से जुड़ जाना चाहिए।।

1 जनवरी का नहीं है कोई आधार, यह है अंग्रेजों का ही रंग-रंगोलियों का त्यौहार, यदि हमें है अपनी संस्कृति व इतिहास से प्यार तो हमें इस दिन नव वर्ष नहीं मानना चाहिए।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा ही है नव वर्ष का सही काल, विनती करता है "खुशहाल" 1 जनवरी की आदत छोड़, हमें इसी दिन ही नव वर्ष पर्व मनाना चाहिए।।

—खुशहाल चन्द आर्य, 180 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकता-700007

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दुःख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

—राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

नया वर्ष 1 जनवरी से नहीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से क्यों मनायें?

-कन्हैयालाल आर्य

यूनान मिश्र रोमां सब मिट गये जहाँ से,
कोई बात है कि मिटती हस्ती नहीं हमारी।

यह बात किसी कवि ने कही है तो उस के पीछे उसकी मूल भावना यही थी कि हमारी संस्कृति सबसे पुरानी है। आज विश्व में मुख्यत: तीन संस्कृतियाँ काम कर रही हैं। ईसाई संस्कृति केवल 2012 वर्ष पूर्व की है। मुस्लिम संस्कृति 1400 वर्ष पूर्व की है। इससे पूर्व जो संस्कृति थी वह मूल संस्कृति थी, वह संस्कृति थी वेद की संस्कृति। आज पूरा विश्व वेद को सबसे प्राचीन पुस्तक मानता है। हमारी सभ्यता का स्रोत भी सृष्टि का आदिकालीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। विश्व के सभी इतिहासकार इन मान्यता से सहमत हैं कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसी मान्यता के आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ(UNO) ने ऋग्वेद को विश्व सभ्यता की आदि धरोहर स्वीकार कर लिया है। यह वैदिक मान्यताओं की विजय है। वैदिक संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा (पहली तिथि) से नववर्ष का प्रारम्भ होता है। यह नववर्ष किसी न किसी रूप में पूरे भारतवर्ष में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्या है इस दिन का वैज्ञानिक महत्त्व?

यूरोपीय सभ्यता के ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार पहली जनवरी को नववर्ष मनाया जाता है लेकिन विक्रमी सम्वत् के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को नववर्ष का प्रारम्भ माना जाता है चाहे हम प्रतिदिन के व्यवहार में दिन, सप्ताह, मास और वर्ष की गणना में अंग्रेजी तिथियों का प्रयोग करते हैं परन्तु आज भी हम धार्मिक अनुष्ठानों एवं मांगलिक कार्यों में विक्रमी सम्वत् की तिथियों का निर्धारण ही करते हैं।

संसार का प्रत्येक समुदाय अपने यहाँ प्रचलित वर्ष के प्रथम दिन को एक पर्व के रूप मे मनाता है। जिस प्रकार ईस्वी वर्ष के अनुसार प्रथम जनवरी को 'न्यू ईयर डे' या नववर्ष के रूप मे मनाया जाता है उसी प्रकार भारतवासी सृष्टि के आदिकाल से नवसम्वत्सर के पहले दिन को एक पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। भारतीय प्राचीन इतिहास परम्परा में इसको 'सृष्टि सम्वत्सर' कहते हैं। यह मान्यता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ था। इसका अभिप्राय हमे यह समझना चाहिये कि इस दिन से सृष्टि व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ था। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी मनुस्मृति विशेषज्ञ के अनुसार ज्योतिष के ग्रन्थ हिमाद्रि में इस इतिहास को बताने वाला एक श्लोक आया है।

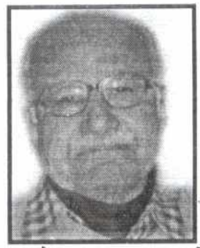
कन्हैया लाल आर्य

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति।

इसका भाव यह है कि सृष्टि की रचना हो चुकी थी अर्थात् सबसे पूर्व परमपिता परमात्मा ने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का अपनी ईक्षण शक्ति से निर्माण किया तत्पश्चात् वनस्पति जगत का निर्माण किया, फिर कीट पतंग, पशु जगत का निर्माण किया तब चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को ब्रह्मा ने इस मानव जगत का निर्माण किया अर्थात् एक व्यवस्था का प्रारम्भ समाज में हुआ और उसी दिन सूर्य के उदय के साथ काल की गणना प्रारम्भ हुई।

कुछ लोग सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब सतानवें करोड़ उनतालिस लाख उन्नचास हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व मानते हैं परन्तु मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवें करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व हुआ परम पिता परमात्मा यह चाहते थे कि जब मानव इस संसार मे आये तब उसके लालन पालन की सुख सुविधाओं की पहले से व्यवस्था हो जिस प्रकर सन्तान के उत्पन्न होने से पूर्व माता के स्तनों में दूध का निर्माण हो जाता है उसी प्रकार वह जगत माता यह चाहती थी कि जब मैं मानवी सृष्टि का निर्माण करूँ तो उससे पहले पृथ्वी, जल, सूर्यादि ग्रह, वनस्पति जगत का निर्माण करूँ तभी मैं मानवी सृष्टि को लाऊँ। तभी यह उचित लगत है कि मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ बारह वर्ष पूर्व ही सूर्य उदय के प्रथम दिवस को ही हम सृष्टि सम्वत्सर मानते हैं।

तब से भारत के लोग इस दिन को एक उत्सव के रूप में मनाते चले आ रहे हैं। सचमुच वह दिन कितना सुहावना रहा होगा जब इस सृष्टि के व्यवहार का एक व्यवस्था के रूप में प्रारम्भ हुआ होगा।

यह सम्वत्सर (ज्ञान का स्त्रोत) इस बात का संकेत देता है कि विश्व में भारत की संस्कृति सभ्यता इतिहास सबसे प्राचीन है। काल गणना का इतना पुराना लेखा जोखा किसी देश और समाज में नहीं मिलता। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि विश्व में ज्ञान का उद्भव और विकास सबसे पहले भारत में ही हुआ था क्योंकि बिना ज्ञान के न तो कोई दिन, मास, वर्ष, युग आदि का वर्गीकरण कर सकता है और न ही काल गणना की परम्परा को ही सुरक्षित रखा जा सकता है। हम भारतवासियों के लिए यह गर्व की बात है और गौरव का विषय है कि हम विश्व की सबसे प्राचीन स्मृतियों को संजोये हुए हैं। सबसे प्राचीन तथ्यों को सुरक्षित रखे हुए हैं। यह नव सम्वत्सर विश्व सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। (वसन्त ऋतु से प्रारम्भ) चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा वसन्त ऋतु में आती है। वसन्त का प्रभाव न केवल मनुष्यों बल्कि पेड़-पौधों पर भी देखा जाता है। वास्तविकता यह है कि इस ऋतु में सम्पूर्ण सृष्टि में सुन्दर छटा बिखर जाती है। इस ऋतु में हमें सर्दी से छुटकारा मिल जाता है बल्कि पेड़-पौधों पर हरियाली छा जाती है, पशु पक्षी भी मस्ती में आ कर झूमने लगते हैं। यह आनन्द क्या हम अंग्रेजी नववर्ष की पहली जनवरी को अनुभव कर सकते हैं। यदि नहीं तो क्यों हम उस तिथि से चिपके हुए हैं? नया सम्वत् अर्थात् भारतीय नववर्ष के कारण हमारे मन में नई उमंगों का संचार हो जाता है जो पहली जनवरी को कभी नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त विक्रमी सम्वत् के मासों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदय और अस्त होने के आधार पर रखे गये हैं। यह बात तिथियों पर लागू होती है। वे चन्द्रमा और सूर्य की गति पर आधारित होते हैं। इस प्रकार विक्रमी सम्वत् वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि जब भारत पर शक जाति का शासन प्रारम्भ हो गया तो उसने इस सम्वत्सर प्रथा को समाप्त कर दिया। बाद के वर्षों में सम्राट विक्रमादित्य ने 2068 वर्ष पूर्व इसे फिर से प्रारम्भ किया तब से लेकर आज तक यह तिथि विक्रम सम्वत् के पहले दिन के रूप में मनायी जाती है महाराजा विक्रमादित्य न केवल दानी एवं वीर पुरुष थे बल्कि दीन दुखियों के सहायक एवं देशभक्त थे। उन्होंने जो सम्वत् प्रारम्भ किया वही आज विक्रमी सम्वत के नाम से जाना जाता है। ईरान में इस तिथि को 'नैरोज' अर्थात् नववर्ष के रूप में मनाया जाता है।

चैत्र से लेकर बैसाख के मास तक भारत के अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न मान्यताओं के अनुसार नववर्ष तथा अन्य विशेष उत्सव मनाये जाते हैं। यह दिन जम्मू-कश्मीर में नवरेह, पंजाब में बैसाखी, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, सिन्धी में चेतीचंड, केरल में विशु, असम में रोंगली बिहू आदि के रूप में मनाया जाता है। आन्ध्र में यह पर्व उगादि के नाम से मनाया जाता है। (उग्रादि) युगादि का अर्थ होता है मानवी सृष्टि रचना का प्रथम दिन। इस प्रकार इस दिन को पर्व के रूप में आदि काल से यह परम्परा चली आ रही है।

कुछ लोग इस प्राचीन सम्वत्सर पर सन्देह प्रकट करते हैं। वे विश्वास नही करते कि सृष्टि इतनी प्राचीन भी हो सकती है और इतने प्राचीन सम्वत्सर की गणना को सुरक्षित रख पाना कैसे सम्भव हुआ होगा? मैं उन लोगों के सन्देह निवारण के लिए एक प्रमाण देना चाहता हूँ कि यह काल गणना किस प्रकार सुरक्षित रही है। हम सभी भारतवासी जानते हैं कि प्रत्येक यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों एवं विवाह आदि संस्कार के समय पुरोहित यजमान से जो संकल्प कराता है उस समय वह यजमान से 'जम्बू द्वीपे, भरत खण्डे, आर्यावर्त अन्तर्गते' आदि शब्दों का उच्चारण करा कर उस देश, शहर, गाँव, वंश के साथ कालगणना भी बुलवाता है। उसमें युग, मास, वर्ष के साथ प्रहर और पल का भी उच्चारण करवाता है। इस प्रकार दिन प्रतिदिन की उच्चारण परम्परा से यह कालगणना सुरक्षित चली आ रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने काल गणना को सुरक्षित रखने का यह बुद्धिमता पूर्ण उपाय निकाला है कि उसको हमारे दिन प्रतिदिन के व्यवहार से जोड़ दिया अन्यथा इसको सुरक्षित रखने का कोई और उपाय नहीं हो सकता क्योंकि कभी-कभी प्राकृतिक प्रकोपों से, तो कभी मानवीय उथल-पुथल (आक्रान्ताओं द्वारा साहित्य को नष्ट करने) से साहित्य तो नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। यदि केवल साहित्य मे यह काल गणना होती तो कभी भी नष्ट हो जाती वैसे तो हमारे उपलब्ध साहित्य में भी इस सम्वत्सर क पर्याप्त विवरण मिलता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में इस काल

गणना का पूरा विवरण दिया है। जिज्ञासु जन इस ग्रन्थ का अवलोकन करके इस विषयक विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

इसी पवित्र दिन पर 10 अप्रैल 1875 को युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। भगवान राम का राज्याभिषेक, महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, आर.एस.एस. के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का जन्मदिन, महाराज शालिवाहन द्वारा हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में इसी दिन राज्य स्थापित करना आदि घटनाओं का संयोग भी इसी पर्व के साथ आता है।

आइये, यह दिवस अर्थात् चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा अर्थात् प्रथम दिन (11 अप्रैल 2013) को पूरे उत्साह के साथ मनायें। यह केवल वर्ष का प्रथम दिवस नहीं है, यह तो भारतीय इतिहास और ज्ञान का गौरव दिवस है क्योंकि इतनी प्राचीन सभ्यता विश्व में किसी देश और समाज की नहीं है इसी चैत्र मास की प्रतिपदा (पहली) तिथि को ब्रह्मा जी ने सबसे बढ़िया दिन माना है। सृष्टि उत्पत्ति होने के बाद ब्रह्मा ने वेदों से ही लेकर आदिम व्यक्तियों, स्थानों और पदार्थों के नाम रखे थे। आज विश्व में सर्वत्र नये वित्त वर्ष का प्रारम्भ एक अप्रैल अर्थात् नवसम्वत्सर गणना वर्ष के आस-पास ही किया जाता है तो अर्थशास्त्री भी इसके महत्त्व को स्वीकार करते हैं। अतः प्रत्येक प्रकार से वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित इस भारतीय परम्परा के विक्रमी सम्वत् को ही नववर्ष से सम्बोधित करें और विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थों की वैदिक संस्कृति को पुनः जागृत करने के लिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नववर्ष मानें। आइये इस नववर्ष के अवसर पर हम अच्छे संकल्प लेने का विचार करें। नव सम्वत्सर पर मेरी सभी विश्ववासियों को शुभ कामनायें।

किसी कवि ने इस दिन के लिए निम्नलिखित पंक्तियों को लेखबद्ध किया है:-

नववर्ष का आगमन मंगलमय हो,
जीवन में नित नूतन हलचल मंगलमय हो।
मिटे तिमिर फैलें उजियारा कण-कण में।
आशाओं का स्वर्णिम आँचल मंगलमय हो।।

आर्य सदन, 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गाँव। चलभाष : 09911197073

आर्य समाज स्थापना दिवस की 138वीं वर्ष गांठ (11 अप्रैल 2013)

बुलन्दशहर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे, दिल्ली से 77 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां जिला मुख्यालय है। जिले में 6 तहसीलें हैं। कई नगर-कस्बे तथा हजारों गांव हैं।

सभी प्रमुख नगरों-कस्बों तथा कुछ गांवों में आर्य समाजों के भवन हैं जिनकी कुल संख्या 50-100 के बीच है। नगर में, चौक बाजार में, आर्य समाज का विशाल भवन है। इसकी स्थापना 126 वर्ष पूर्व हुई थी। इसी भवन में आर्य कन्या इन्टर कालिज की कक्षाएँ चलती हैं।

126 वर्षों में नगर की जनसंख्या लगभग 6 गुना हे गई है। कई मौहल्ले बने। अब नगर के चारों ओर अनेकों कॉलोनियां बनी हैं और बन रही हैं। रविवार को आर्य समाज में साप्ताहिक यज्ञ व सत्संग पुरुषों का प्रातः तथा महिलाओं का दोपहर को होता है। पर्व/जयन्तियां भी मनाई जाती हैं।

जिस प्रकार जनसंख्या 6 गुना हुई उसी प्रकार आर्य समाजें भी 5-6 हो जानी चाहिए थीं तभी तो वेदों का प्रचार-प्रसार होता और आर्य समाज का कार्य बढ़ता और उसका विस्तार होता। खेद है कि नगर में दूसरी आर्य समाज तो बनी किन्तु 47 वर्ष हो गए लेकिन भवन नहीं बना। आर्य समाज की प्रगति तब हो सकती है जब वह प्रतिदिन प्रातः व सांय 4-4 घण्टे खुले जहां हवन सत्संग हो।

-इन्द्र देव, म्यंमार वाले, सिद्धान्त भूषण
संचालक वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय
18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, मो. 08958778443

विधयाऽमृतमश्नुते।

–सुधा सावंत

यजुर्वेद का चालीसंवा अध्याय ईशोपनिषद् नाम से जाना जाता है। इसमें विद्या और अविद्या पर कई मंत्रों में विस्तार से चर्चा की गई है, उनमें से एक मंत्र–

विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा
विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

अर्थ है विद्या और अविद्या को जो व्यक्ति साथ-साथ ठीक से समझता है वह अविद्या के द्वारा मृत्य को पार करके विद्या से अमरता को या अमृत को प्राप्त करता है।

मंत्र में 'विद्या' को और 'अविद्या' को दोनों को तत्वतः साथ-साथ जानने की बात कही गई है। यहाँ अविद्या अज्ञान का पर्यायवाची नहीं है। इस मंत्र में विद्या का मतलब है आत्म, परमात्मा या चेतन तत्व का ज्ञान कराने वाली विद्या। अविद्या का मतलब है जड़ अथवा प्रकृति का ज्ञान। इस प्रकार जीव को अपनी आत्मा और परमात्मा का भी ज्ञान हो, और प्रकृति की जानकारी के सहारे इस संसार में ठीक से जीवन बिता कर अध्यात्म विद्या के सहारे जीवात्मा और परमात्मा के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है और अमृत को प्राप्त होता है या आत्मा के अविनाशी नित्य स्वरूप को पहचान कर आनन्द की प्राप्ति करता है।

वेदों में त्रैतवाद की मान्यता है। परमात्मा, आत्मा और प्रकृति तीनों ही नित्य हैं, तीनों की सत्ता सदा बनी रहती है, अतः हमें तीनों के बारे में जानकारी होना जरूरी है। ऋषि मंत्र में पहले तो यह स्पष्ट करना चाहते है कि ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला ज्ञान विद्या है इसे पराविद्या के नाम से भी जाना जाता है और ईश्वर की चेतना सत्ता से भिन्न जड़ प्रकृति के विषय में ज्ञान अपराविद्या या अविद्या के नाम से जाना जाता है।

आप कहेंगे कि अर्थ ठीक से स्पष्ट नहीं हो रहा है तो यह समझिए कि हम डॉक्टर बनते हैं चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन करते हैं। शरीर की संरचना, कार्य-प्रणाली का पूरा ज्ञान प्राप्त करते हैं। बीमारियों के बारे में व उनके उपचार के बारे में पढ़ते हैं लोगों का उपचार करते हैं उन्हें रोगमुक्त करते हैं। इससे अच्छा धन भी कमाते हैं और की से जीवन बिता करके अवस्था पूर्ण होने पर शरीर त्यागते हैं। आत्मा का ज्ञान हो तो मृत्यु के भय से भी मुक्त रहते हैं। तो इस प्रकार अविद्या से जीवनयात्रा ठीक से सम्पन्न करके, आत्मज्ञान प्राप्त करके आत्मा के नित्य शाश्वत रूप को जान जाते हैं।

हाँ, यदि अविद्या और विद्या का साथ साथ तत्वतः ज्ञान न हो तो अपराविद्या सच्चे अर्थ में 'अविद्या' बन जाती है। जैसे हम डॉक्टर बन जाते हैं परन्तु स्वार्थ के कारण रोगी का इलाज ठीक से नहीं करते, उनके इलाज के बहाने शरीर का कोई हिस्सा निकाल कर बेच देते हैं। या, खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट करके दूसरों के स्वास्थ्य को खराब करते हैं तो यह ज्ञान निश्चय ही अविद्या कहलाएगा। आज परा विद्या को भुलाकर हम बहुत अधिक भौतिकवादी बन गए हैं। आज समाज की दुर्दशा का यही एक मात्र कारण है कि हमने 'विद्या' के जीवन से पूरी तरह निकाल दिया है। भौतिक वस्तुओं के ज्ञान को ही पूर्ण समझ लिया है। एश-आराम के साधन जुटाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। यही हमारे जीवन में, बाद में दुःख और निराशा का कारण बन जात है। वैदिक काल में ऐसी स्थिति से बचने के लिए है कहा गया था–'यस्तद्वेदोभयम् सह' अर्थात् जो इसे साथ-साथ तत्वतः जाने वह संसार सागर को पार कर अमरता को प्राप्त करता है।

हम डॉक्टर बनते हैं चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन करते हैं। शरीर की संरचना, कार्य-प्रणाली का पूरा ज्ञान प्राप्त करते हैं। बीमारियों के बारे में व उनके उपचार के बारे में पढ़ते हैं लोगों का उपचार करते हैं उन्हें रोगमुक्त करते हैं। इससे अच्छा धन भी कमाते हैं और ठी से जीवन बिता करके अवस्था पूर्ण होने पर शरीर त्यागते हैं। आत्मा का ज्ञान हो तो मृत्यु के भय से भी मुक्त रहते हैं। तो इस प्रकार अविद्या से जीवनयात्रा ठीक से सम्पन्न करके, आत्मज्ञान प्राप्त करके आत्मा के नित्य शाश्वत रूप को जान जाते हैं।

प्राचीनकाल में देखें, तो हम पाते हैं कि शंकराचार्य आत्मज्ञान प्राप्त करके ही वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए सक्रिय हो गये थे। स्वामी दयानन्द की बात करें या स्वामी श्रद्धानन्द की, सभी महान् विभूतियों ने आत्मज्ञान प्राप्त करके सारे मानव समाज की भलाई के लिए कार्य किया। अपने गुरु स्वामी विरजानन्द के आदेशानुसार अज्ञान

के अन्धकार के दूर करने का संकल्प लेकर जगह-जगह उपदेश देना आरम्भ किया। पंडितों से शास्त्रार्थ किया और सच्चे वैदिक ज्ञान को फैलाने में जीवन लगा दिया। आज समाज की गिरती स्थिति का यही एक मात्र कारण है कि हमने "अविद्या" को ही 'विद्या' मान लिया है और उसे केवल धनोपार्जन का साधन बना लिया है। मानव-मूल्यों को भुला दिया है और ईश्वर की सत्ता को पूरी तरह नकार दिया है। आज विद्या एक धन कमाने का आधार है। न उससे चरित्रनिर्माण की जरूरत पूरी होती है न सच्चा सुख मिलता है। समय के साथ विद्या की परिभाषा में परिवर्तन आया है। कहा गया-

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद्धर्मः ततः सुखम्॥

किन्तु 'अर्थकारी' विद्या के सामने यह लक्ष्य भी अब प्राप्त नहीं हो रहा है।

अब समय की पुकार है कि हम यजुर्वेद के इस मंत्र के अर्थ को सही रूप में समझें और आत्मसात् करें। मानव जीवन का और प्रकृति का संरक्षण तभी सम्भव हो सकेगा। अन्यथा समाज में फैली अव्यवस्था और प्राकृतिक प्रदूषण दोनों ही सृष्टि के विनाश का आधार बनेगें। आज पुनः आवश्यकता है कि हम स्वामी दयानन्द जी के उस उद्घोष को पुनः दोहराएँ, जिसमें उन्होंने कहा कि हमें वेदों के ज्ञान की ओर लौटना है, पुनः प्रकृति की ओर लौटना है। तभी प्रकृति और मानव जीवन पूर्ण रूप से सुरक्षित रह सकेगा। अतः अब भी समय है कि हम सचेत हो जाएँ। प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा सभी के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। केवल भौतिकवादी न बन कर आस्तिक बनें। ईश्वर की सत्ता में विश्वास रख कर जीवन को सफल बनाएँ।

-उपवन, 609, सैक्टर-29, नोएडा-201303

वर्तमान समय में संस्कृत की उपादेयता

- रवि शास्त्री

संस्कृत भाषा ने देश की सभी परम्पराओं और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व किया है, चाहे वे किसी भी धर्म जाति भाषा के रहे हो, आस्तिक हो या नास्तिक सभी ने संस्कृत के महासमुद्र में अपनी वाग्धारा का अर्घ्य समर्पित किया है। संस्कृत भाषा किसी सम्प्रदाय विशेष की भाषा नहीं है किन्तु आज हम किन्ही राजनैतिक और आर्थिक संकीर्णताओं से अभिशप्त होकर पश्चिमी ज्ञान विज्ञान की ओर लालायित हैं तथा संस्कृत साहित्य के अध्ययन की ओर हमने उपेक्षा की दृष्टि अपना ली है।

आधुनिक काल में संस्कृत की अनिवार्यता इसलिए भी रेखांकित हो जाती है ताकि वह आधुनिक ज्ञान विज्ञान के मूल स्त्रोतों को पकड़ सके। विदेशो में इस अमूल्य संपदा का व्यापक स्तर पर दोहन पिछली 3 सदियों से प्रगति पर है लेकिन भारतवर्ष में इस विषय पर अभी गम्भीरता से सोचना भी आरम्भ नहीं किया है। ब्रिटेन रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि देशो में संस्कृत के अध्ययन के लिए जो प्रोत्साहन दिया जा रहा है उसका मुख्य कारण है कि वहाँ के बुद्धिजीवियों ने संस्कृत की प्रासंगिकता को आधुनिक संदर्भ में समझ लिया है। उदाहरण के लिए अमेरिका के वैज्ञानिको ने ब्लूम फील्ड की इस मान्यता को सत्य सिद्ध कर दिया है कि **'पाणिनी की अष्टाध्यायी'** की सहायता से अमेरीकन वैज्ञानिक कम्प्यूटर प्रणाली का आविष्कार करने में सफल हुए हैं। सेवियत विद्वान गोरवोसस्की महाभारत में ब्रह्मास्त्र प्रयोग के अवतरणों से प्राचीन भारत में एटम बम होने के अस्तित्व होने की सम्भावनाओं का पता लगा रहें है। लन्दन और अमेरिका में 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत गणित के आधुनिक फार्मूली को समझने के लिए प्राचीन भारतीय गणित शास्त्र को एक उपयोगी प्रणाली एक रूप में मान्यता मिल चुकी है। पर्यावरण और औषधि के विषय में जानने के लिए वृक्षायुर्वेद को खंगाला जा रहा है।

बोधायन ऋषि का शुल्ब सूत्र ही पाइथागोरस का रेखागणित है। कहने का तात्पर्य है कि विदेशी हमारी संस्कृति और संस्कृत दोनों का दोहन कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियों से यह भली भाँति सिद्ध हो जाता है कि अब भारत में संस्कृत को महत्व देना कितना आवश्यक है। निःसन्देह संस्कृत का रूप 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की आधुनिक व्याख्या है तथा संस्कृत साहित्य के विशाल पिटारे में गणित, भूगोल, ज्योतिष, शरीर, खगोल, संगीत कला रसायन धातु शिल्प, वृक्ष, भौतिकी और न जाने कितने विज्ञान के भण्डार समाहित है। आवश्यकता है उस पिटारे के महत्व को समझ कर उसे खोलने की, नहीं तो कही ऐसा न हो कि हम अपनी इस अमूल्य धरोहर से वंचित रह जाएं।

प्रकाशमय जीवन

सौर वर्ष के बारह मास प्रसिद्ध तैंतीस देवताओं में से बारह आदित्य देवता कहलाते हैं। ये बारह आदित्य देवता क्यों कहलाते हैं? ये बारह आदित्य देवता इसलिए कहलाते हैं क्योंकि पृथिवी एक सौर वर्ष (364.25 दिन) में सूर्य का एक चक्र अर्थात् एक परिक्रमा पूरी करती है। इससे सूर्य (आदित्य) ही हमें आकाश में एक गोलाकार परिधि (चक्र) में घूमता प्रतीत होता है। जिस मार्ग पर सूर्य घूमता हुआ दृष्टिगोचर होता है, वह मार्ग ज्योतिमण्डल या राशिचक्र कहलाता है। खगोलशास्त्रियों द्वारा इस राशिचक्र के बारह भाग किये गये हैं। राशिचक्र से बाहर आकाश में दीखने वाले बारह नक्षत्रसमूहों की आकृति विभिन्न प्राणियों एवं वस्तुओं के सादृश्य होने के कारण इन राशियों के नाम मीन, मेष, वृषभ, मिथुन व कर्क आदि रखे गये हैं।

सूर्य एक राशि में जितने दिनों तक रहता है उसे एक मास कहते हैं। जैसे सूर्य जब तक मीन राशि में रहता है, तब तक चैत्र सौर मास रहता है और जब इस राशि से संक्रान्त करके सूर्य दूसरी राशि मेष में प्रवेश करता है तब दूसरा मास वैशाख अर्थात् दूसरा आदित्य कहलाता है। इसी प्रकार एक के बाद एक बारह आदित्य कहलाते हैं।

सौर वर्ष के बारह मास आदित्य जोकि चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ व आषाढ़ आदि अन्तरिक्ष में स्थित अट्ठाईस नक्षत्रों पर आधारित नाम अपना एक विशेष अर्थ रखते हैं। पवित्र सामवेद में एक मन्त्र है-

तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे।
आदित्यासः समहसः कृणोतन॥ 365॥

अर्थात्- हे परमेश्वर की शक्तियों! हे प्रकाशयुक्त सूर्यकिरणो! हे ज्ञान से प्रकाशित आदित्य ब्रह्मचारियो! आप हमारे और पुत्र व पौत्रों के जीवन के लिए दीर्घ आयु प्रदान करें तथा उसके उपाय बतायें।

इस मन्त्र में उपासक द्वारा परमात्मा से आदित्यों इन मास के नामों के अनुसार क्रमशः अपने जीवन में अन्धकार, अविद्या व अशुचिता आदि को दूर भगाकर प्रकाश, तेजीस्विना, विद्या एवं सुचिता भरने की प्रार्थना की गई है। मन्त्र में, ''आदित्यासः समहसः कृणोतन्'', कहकर बारह आदित्यों से प्रार्थना की गई है। पूर्व कथन के अनुसार सूर्य की बारह संक्रान्तियाँ बारह आदित्य कहलाती हैं और इन अलग-अलग राशियों से सूर्य की किरणों का पृथिवी के जीवों पर भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है। नक्षत्रों के नाम पर आधारित बारह मासों (आदित्यों) से हम निम्न प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं-

1. वैशाख (विशाखा नक्षत्र) हम संसार रूपी वृक्ष की 'विशाखा'' अर्थात् विशिष्ट शाखा हैं, सर्वोत्तम भाग हैं, क्योंकि हमारा जीवन श्रेष्ठ संकल्पों पर आधारित है।

2. ज्येष्ठ (जयेष्ठा नक्षत्र) हमारा श्रेष्ठ संकल्प की हमें श्रेष्ठ व ज्येष्ठ बनायेगा। अतः हम सदैव श्रेष्ठ व ज्येष्ठ बने रहने का प्रयत्न करेंगे।

3. आषाढ़ (पूर्वाषाढ़ नक्षत्र) हमारे ज्येष्ठ बनने का अभिप्राय है- ''अषाढ़'' अर्थात हमें काम-क्रोधादि शत्रुओं से पराजित नहीं होना बल्कि उन्हें अपने वश में रखना है।

4. श्रावण (श्रवण नक्षत्र) काम-क्रोधादि पर विजय प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि हम उत्तम विद्वानों, ऋषि-मुनियों व सच्चे साधु-संन्यासियों के पवित्र उपदेश एवं वेद-शास्त्रों आदि आर्ष ग्रन्थों के पावन ज्ञानोपदेशों का श्रद्धापूर्वक श्रवण व मनन करें।

5. भाद्रपद (भद्रपद नक्षत्र) क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलना ही कल्याणकारी, स्वस्ति पंथा है अर्थात् श्रेयमार्ग है।

6. आश्विन (अश्विनी नक्षत्र) इसी कल्याणकारी मार्ग पर चलने के लिए हमें श्वः श्वः अर्थात् कल-कल की प्रार्थना नहीं करनी है, बल्कि-

7. कार्तिक (कृत्तिका नक्षत्र) काम-क्रोधादि शत्रुओं का अभी से छेदन प्रारम्भ कर देना है।

8. मार्गशीर्ष (मृगशिरा नक्षत्र) इन अज्ञान, अविद्या व काम-क्रोधादि शत्रुओं को ढूंढ़-ढूंढ कर इनका विनाश करना है और हमें ''मृग शिरस'' अर्थात् ढूंढने वालों का मुखिया बनना है।

9. पौष (पुष्य नक्षत्र) हम इन शत्रुओं को नष्ट करके अपने शरीर व आत्मा को पुष्ट करेंगे, शक्तिशाली बनायेंगे।

10. माघ (मघा नक्षत्र) हमारी आत्मा और शरीर के पौषण और पुष्टि से हमारे जीवन में ''मा-अघ'' अर्थात् पाप का लवलेश मात्र भी नहीं रहेगा और हम निर्मलता व

(शेष पृष्ठ 10 पर)

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्रीमती कपूरी देवी पत्नी श्री उम्मेद सिंह सैक्टर-6, बहादुरगढ़	16000
आर्य समाज, सी-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली	13000
श्री अमरीश जी झाम सुपुत्र माता कृष्णा जी झाम, गुड़गांव,	11000
अंजनि प्रोपर्टीज, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	5100
श्री विकास बंसल सुपुत्र श्रीमती रामदुलारी बंसल रोहिणी, दि.	5100
श्रीमती शबनम जून पत्नी श्री राजेन्द्र जून एम.एल.ए., बहादुरगढ़	5100
ब्र. राजसिंह जी आर्य, आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दि.	3100
आर्य समाज, कीर्ति नगर, नई दिल्ली	2100
श्रीमती सुमन देवी सुपुत्री श्री रमेश जी बहादुरगढ़	2100
राजवन्ती पी.टी.आई. सेवा निवृत, राजकीय उच्च विद्यालय	2100
दादी रिसौली देवी की 17वीं बरसी पर दान	1101
श्री उग्रसैन आर्य सुपुत्र श्री रतन लाल बालौर, झज्जर	1101
श्री विशाल कुमार सुपुत्र श्री सतीश कुमार बहादुरगढ़	1101
श्री सतीश जी छिकारा चेयरमैन जिला परिषद् झज्जर	1101
श्री सत्यपाल वत्स काठमण्डी, बहादुरगढ़	1100
मा. स्वरूप सिंह जी गांव छावला दिल्ली	1100
श्री सत्यपाल जी यादव, नजफगढ़, दिल्ली	1000
चौ. वीरेन्द्र सिंह जी ग्राम दौलताबाद, गुड़गांव	1100
श्री कर्ण सिंह माजरा डबास, दिल्ली	1000
श्रीमती कौशल्या पाहुजा गुड़गांव	1100
श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100
श्रीमती पुष्पा चावला मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	1000
श्री कुलदीप प्रकाश जी,सुपर एम.आई.जी., सै.83, नोएडा, उ.प्र.	1000
श्रीमती सुमन मायति रोहिणी दिल्ली	1000
रामदुलारी बंसल, वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	1000
श्री ओ.पी. सहरावत, वैदिक वृद्धाश्राम, बहादुरगढ़	501
श्री राजेश मलिक बराही रोड, बहादुरगढ़	501
श्री राजगर्ण जी आर्य गुलिया बादली, झज्जर	501
श्री राजवीर जी आर्य, धर्म विहार बहादुरगढ़	501
श्री छोटेलाल जी जाखड़ ढाणी साल्हावास	501
स्व. श्री राजेन्द्र सिंह जी परनाला बहादुरगढ़	500
श्री कन्हैयालाल जी आर्य, गुड़गांव	500
मा. हरीसिंह जी दहिया अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़	500
श्रीमती निर्मला आर्या सैक्टर-15, गुड़गांव, हरियाणा	500
श्रीमती वेदवती आर्या मुरादपुर टेकना, आर्य समाज प्रधाना	500
श्री ओम शरण कुमार सिसोदिया भीकमसिंह कॉलोनी,शाहदरा, दि.	500
श्री विक्रम विजय एम.आई.ई., बहादुरगढ़	500
मा. बलजीत सिंह (चिमनी) नजफगढ़	500
श्री जयवीर जी बुपनिया	500
श्री ज्ञानभिक्षु वानप्रस्थी वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	500
मा. ब्रह्मजीत जी आर्य प्रधान आर्य समाज सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500
डी.एल.आई.यू.एन., बहादुरगढ़	500

विविध वस्तुएं प्राप्त

श्री भगवान जी जसोरखेड़ी कबीर आश्रम, लाईन पार, बहादुरगढ़	21 किलो चावल
श्री देवेन्द्र कुमार जी धनखड़, बहादुरगढ़	101/-रूपये, 75 किलो गेहूं
फरिश्ता सॉप साबुन, पंजाबी बाग, दिल्ली	200/- रूपये, 2 पेटी साबुन
श्री उमेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़	1 क्विंटल चावल+ 50 किलो दलिया
श्री दीपक छिकारा सुपुत्र श्री रूपचन्द बैंक कॉलोनी, बहादुरगढ़	150 किलो गेहूं
सिलोठी स्कूल झज्जर	10 किलो चावल, 1 किलो दाल
पूरी ऑयल मील, बहादुरगढ़	1 कनस्तर तेल
एम. आर. ट्रेडिंग कम्पनी, अनाज मण्डी, नरेला	500 रूपये, 1 क्विंटल चावल

गऊशाला हेतु

श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य, दौलताबाद, गुड़गांव	1100
श्री महावीर दलाल आत्मशुद्धि एन्कलेव, बहादुरगढ़	501
श्रीमती कनिका बंसल, बहादुरगढ़	500
श्रीमती कपूरी देवी पत्नी श्री उमेद सिंह, सै-6, बहादुरगढ़	500

भोजनार्थ प्राप्त दान

श्री निकेतन	5200
श्री जयदेव हसीजा वानप्रस्थी, गुड़गांव	2000
श्री कृष्ण कुमार राठी, धर्मविहार, बहादुरगढ़	1 समय का भोजन
श्री नवल किशोर गुप्ता जी, जयपुर	1 समय का भोजन
कबीर आश्रम, लाईनपार, बहादुरगढ़	1 समय का भोजन, साबुन वितरण

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

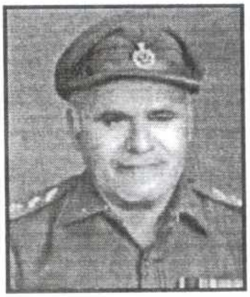

श्री वधवा जी, सी-35, विकासपुरी, नई दिल्ली	150
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डा. पुष्पलता वर्मा जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री एचपी. खंडेलवाल जी, विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्रीमती प्रवीन मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548504, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अप्रैल 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

यज्ञ एवं योग साधना शिविर की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

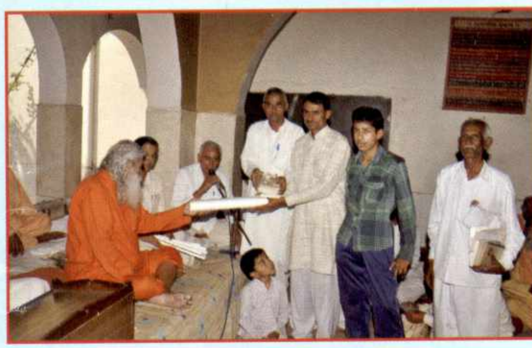

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
अप्रैल 2013
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

यज्ञ एवं योग साधना शिविर की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

धनौरा टिकरी के वार्षिकोत्सव यज्ञ की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)